भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 08 | उदयपुर सोमवार 01 मई 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उदयपुर का पूर्व नाम देवपुर रहा

महाराणा उदयसिंहजी

उदयपुर की बसावट का पूर्व नाम देवपुर रहा। इसके लिए कहा जाता है कि सिसोदिया वंश के बालक उदयसिंह को कुंभलगढ़ के किलेदार आशाशाह देवपुरा द्वारा गुप्त पनाह देकर पालने-पोसने के कारण उदयसिंह महाराणा बने।

तब उस वंश की स्वामीभक्ति को शीर्षमान देते हुए हरे-भरे पहाड़ों के बीच जिस शहर की नींव डाली उसका नाम देवपुर रखा, किन्तु सामन्तों के दबावपूर्ण आग्रह को देखते यह अलबेला शहर कई उतार-चढ़ाव देखने के बाद उदयपुर के नाम से विक्रमी संवत् 1610 अर्थात् 15 अप्रेल 1553 की अक्षय तृतीया, वैशाख शुक्ल तीज को अस्तित्व में आया।

बात हल्दीघाटी युद्ध की है। इधर हल्दीघाटी का रण मचा हुआ था और उधर अकबर की एक टुकड़ी को कुंभलगढ़ भेज दिया गया। उस समय वहां पर किलेदार आशाशाह देवपुरा था जो बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसका भतीजा डूंगरसिंह था।

दोनों बड़े बहादुर, जोशीले और अपने कर्तव्य के प्रति मर मिटने वाले थे। किले का मुख्य दरवाजा लोहे के तीखे भालों से युक्त, बड़ी मजबूती लिए था। शाही हाथी बार-बार उनसे टकराकर लहूलुहान हो गया था। अकबर के सैनिकों के आगे अपने दमखम को सवाया मानते हुए दोनों वीर अपने हाथों में लपलपाती तलवारें लिए दरवाजे के ऊपर से उतरकर नीचे आए और जोरदार भिड़न्त की।

यह भिड़न्त इतनी जोरदार थी कि शाही हाथी का एक दांत उखाड़ दिया गया और सूंड कटकर दूर जा गिरी। इससे हाथी आगे नहीं बढ़ सका और पाछपगा (पीछे) खिसकने लगा जिससे उसने अपने ही सेना के जांबाजों को बुरी तरह कुचल दिया।

इस घटना की साख देता आशाशाह की 13वीं पीढ़ी के वंशधर एडवोकेट अक्षयसिंहजी देवपुरा ने बताया कि आशाशाह के बाद क्रमशः श्रीपत, दामा (श्रीपत का पांचवा पुत्र), रघुनाथ, रेखचंद, परसराम, भवानीदान, दौलतराम, नारायणदास, जयकिशन, शालग्राम, रूपचंद तथा हरखलाल हुए।

देवपुराजी ने 23 फरवरी 2004 को अपने निवास रावजी का हाटा, उदयपुर में मुझे यह छंद सुनाया जो उन्हें उनके बहीभाट (पोथी वाचक) से सुनने को मिला-

गजदंत उखाड़ण देपुरा, हाथ लिया शमशीर।
जो डूंगरसी पाछो फरे, लाजे कुंभलमीर॥

भावार्थ- अकबर के शाही हाथी के दांत उखाड़ने के लिए वीरवर आशाशाह देपुरा ने अपने हाथ में तलवार उठाई। रणबाज डूंगरसिंह भी कम जोशीला नहीं था। यदि वह इस युद्ध से मुंह मोड़ लेता तो कुंभलगढ़ को लज्जित कर देता।

देवपुरा अक्षयसिंहजी ने बताया कि पोथी भाट जब भी आता है, इस छंद के अतिरिक्त निम्नांकित तीन और छंदों से शुभराज करता है। ये छंद हैं-

आशाशाह न हुवतो, देपुरो दीवांण।
रांण उदय हो तो नहिं, हुतो न पातळ रांण॥

अर्थात्- यदि आशाशाह देवपुरा दीवानगी धारण नहीं करते तो उदयसिंह नहीं होते और यदि उदयसिंह नहीं होते तो राणा प्रताप नहीं होते।

हिंदुपत री आंण, राखी रांण प्रतापसी।
ता पितु उदया रांण, रखीयो आशा देपुरा॥

अर्थात्- राणा प्रताप ने हिंदूपत की आन रख उसे अकबर के अधीन होने से बचाया। उनके पिता राणा उदयसिंहजी का आशाशाह देवपुरा ने मान बनाये रखा।

पन्नाधाय न होती तो उदयसिंह न बचता।
आशाशाह देपुरा न होता तो उदयसिंह रांण न बनता।।

अर्थात्- पन्नाधाय यदि नहीं होती तो उदयसिंह जीवित नहीं बचते। आशाशाह देवपुरा यदि नहीं होते तो उदयसिंहजी राणा नहीं बनते।

उन्होंने बताया कि महाराणा उदयसिंहजी नहीं होते तो महाराणा प्रताप नहीं होते और यदि महाराणा प्रताप नहीं होते तो हिन्दुत्व न बचता।।

उदयपुर का त्रिपोलिया गेट

राणा प्रताप जानते थे कि आशाशाह की बुद्धिमत्ता, त्याग एवं समर्पण से ही मेवाड़ राजघराने की सुरक्षा एवं संरक्षण हुआ। वह देवपुरा घराना ही था जिसके कारण पिताश्री उदयसिंहजी का गुमनामी संरक्षण हो सका। इस एहसान से दबे होने के कारण उन्होंने उदयपुर का नाम देवपुर रखा किंतु बाद में सरदारों की राय से उन्होंने यह नाम बदलकर अपने पिता उदयसिंहजी के नाम पर उदयपुर कर दिया।

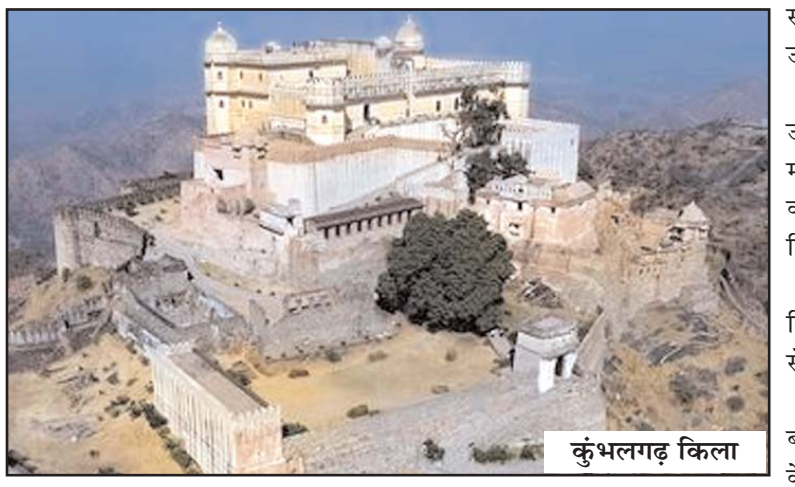

कुंभलगढ़ किला

आशाशाह के निरीक्षण में ही उदयपुर की बसावट शुरू हुई। सबसे पहले चित्तौड़ के जीव लाकर बसाये गये। त्रिपोलिया के वहां की गहरी खाई को पाटकर महल बनवाये। महल के पिछवाड़े तालाब बंधवाया जिसका नाम पीछोला दिया। बाद में राणा अमरसिंह ने कुछ और महल बनवाये। इनका समय-समय पर विस्तार होता रहा।

अक्षयसिंहजी देवपुरा का रहन-सहन अत्यन्त सादगी लिये था। वे मेवाड़ी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में अपनी खास पहचान रखते थे। सिर पर मेवाड़ी पगड़ी, धोती और कोट पहने रहते थे। उनके सुपुत्र भगवतसिंहजी भी एडवोकेट रहे। भगवतसिंहजी के सुपुत्र नरेन्द्रजी भी उसी पुष्ट परम्परा के एडवोकेट हैं। उन्होंने बताया कि दादाश्री अक्षयसिंहजी का जन्म 09 मई 1918 को और निधन 29 नवम्बर 2016 को हुआ। कपासन से जो पोथीवाचक बड़वाजी आते उनका नाम चौथरामजी था।

अक्षयसिंहजी देवपुरा

एक समय आशाशाह ने अपने लड़के का विवाह रचाया। इसका निमंत्रण मेड़ता के राव अक्षयराजजी सोनगरा को भी भेजा। अक्षयराजजी इस विवाह में स्वयं तो उपस्थित नहीं हो सके किन्तु एक चारण को भेजा।

अक्षयसिंहजी के अनुसार भोज में पकवानों की परोसकारी का जिम्मा अलग-अलग कुंवरों को सौंप रखा था। परोसकारी के समय एक कुंवर ने दूसरे कुंवर से परोसकारी का बर्तन छीन लिया और जोर की थप्पड़ मारदी।

चारण यह हाल देख रहा था। उसे थप्पड़ मारने वाला कुंवर अन्य सभी कुवंरों से डीलडौल, चालढ़ाल तथा बलथल में सवाया और किसी बनिये का पुत्र नहीं होकर राजपूत का बालक लग रहा था।

चारण से रहा नहीं गया। उसने आशाशाह से उस कुंवर बाबत पूछा । आशाशाह ने चारण को अपना विश्वस्त जान अन्दर का सारा भेद बता दिया और कहा कि यह कुंवर उदयसिंह हैं।

इस पर चारण बोला कि मैं इनका विवाह मेड़ता राव अक्षयराज सोनगरा की बालकी जयन्ताबाई से करवा दूंगा।

चारण ने मेड़ता पहुंच अक्षयराजजी को सारी घटना कह सुनाई। अक्षयराजजी के लिए इससे बढ़िया प्रस्ताव और क्या हो सकता था कि यदि उनकी कुंवरि उदयसिंहजी से ब्याही जाती है तो वह मेवाड़ की महारानी बनेगी।

आशाशाह भी चाहते थे कि इस विवाह से उन्हें अक्षयराजजी से बड़ा संबल मिलेगा जिससे वे बणवीर का प्रभुत्व क्षीण कर सकेंगे। यही हुआ। बणवीर को गद्दी से उतार उदयसिंहजी (16) को राजगद्दी पर बिठाया गया।

प्रताप इसी जयन्ताबाई के पुत्र थे जो उदयसिंहजी के बाद मेवाड़ के महाराणा बने। महाराणा बनने के बाद उदयसिंहजी ने उस चारण को राजसमंद जिले का मेंगटिया गांव जागीर में दिया।

इसी चारण वंश में ईसरदान आशिया हुए जिन्होंने केसरीसिंह बारहट की बड़ी पुत्री चन्द्रमणि से विवाह किया।

कोटा के बारहट राजेन्द्रसिंहजी (92) ने बताया कि चन्द्रमणिदेवी उनकी बुआ थी। बारहट केसरीसिंहजी उनके भाई जोरावरसिंहजी और पुत्र प्रतापसिंहजी के साथ ईसरदान भी क्रांतिकारियों की अग्रिम पंक्ति में थे। तीनों बारहट वीर- शिरोमणियों के साथ ईसरदानजी भी जेल में रहे।

उदयपुर में ईसरदानजी से मेरी कईबार भेंट हुई। वे बड़े साहित्यप्रेमी और प्राचीन डिंगल काव्यधारा के गंभीर अध्येता थे। केसरीसिंहजी बारहट के साथ वे गांधी आश्रम, वर्धा में महात्मा गांधी के संपर्क में आये। उन्होंने पिलानी के बिड़ला शोध संस्थान में भी काम किया। चारण पत्रिका का संपादन भी किया और आजीवन खादी पहनी। वे लंबी बांहों का कुर्ता पहनते थे पर उनके एक हाथ ही था।

राजेन्द्रसिंहजी ने भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर में अपनी सेवाएं दीं तब मैं भी उनके साथ खोज विभाग में था। ईसरदानजी की 16वीं पीढ़ी में उनके पुत्र मणिराज सुखाड़िया विश्वविद्यालय में सेवारत थे। वे भी मेरे सम्पर्क में रहे। **-म.भा.**

पोथीखाना

बुलन्दप्रभा का प्रभावी विशेषांक

बुलन्दशहर से डॉ. अनूपसिंह के सम्पादन में प्रकाशित 'बुलन्दप्रभा' का जुलाई-सितम्बर 2022 का विशेषांक विश्वस्तरीय भाषा वैज्ञानिक प्रो. महावीर सरन जैन के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समर्पित है।

याद पड़ता है, मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत ने श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत परिषद द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में देश के ख्यातनाम जैन विद्वानों के साथ डॉ. महावीर सरनजी से मेरी मुलाकात कराई थी। जैन पत्रिका 'जिनवाणी' तथा 'श्रमणोपासक' का वर्षों तक सम्पादन करते भाई साहब ने अनेक विद्वानों के लेख प्रकाशित किये थे सो सरनजी का नाम मेरी स्मृतियों में आज भी शिखर, सुमेरू बना हुआ है।

'पत्रों के दर्पण में' आलेख में अशोक सिंहल ने प्रो. सरन को लिखे जो विशिष्टजनों के पत्र दिये हैं उनमें भाई साहब का जयपुर से लिखा 19 जून 1984 का पत्र देखकर मैंने भतीजे डॉ. संजीव भानावत को फोन पर इसकी सूचना दी तो हम दोनों उनकी अनेक स्मृतियों में डबडबा गये। भाई साहब के निधन के बाद भाभीश्री भी उनकी स्मृति में बेसुध चली गईं और फिर मां ने भी मुझे कह दिया था, ''अब मैं किसलिए बची हूं। मुझे तो जीतेजी ही श्मशान में छोड़ आ।'' जब परिचितों का अवसान ही हमारे लिए असह्य होता है तो परिजनों का निधन तो अन्त तक दावानल-सा दर्दीला दु:ख ही दिये रहता है।

प्रस्तुत अंक में डॉ. अनूपजी ने बड़े अनुपम रूप में विचार सम्पन्न विद्वानों के माध्यम से बड़े बुलन्द और प्रभावी ढंग से प्रो. महावीर सरनजी के समग्र को गागर-सागर दिया है। मुखपृष्ठ पर ही उनके चित्र के साथ अभिवन भारत के उद्‌भव-उत्स का यह चौंकाने वाला तथ्यात्मक विश्लेषण दिया है- ''भारतीय परम्परा मानती है कि जलप्रलय के बाद भारत के हिमाचल प्रदेश में मनाली से 20 मील दूर की पहाड़ी पर एक पुरुष बच गया। सृष्टि में एक नारी भी बच गयी थी और इन्हीं दोनों ने मिलकर नया भारत बनाया।''

राजस्थान में पिछले 40 वर्षों से राजस्थानी को मान्यता प्रदान करने का रगड़-झगड़ चल रहा है। इस सम्बन्धी अनेक धरने, ज्ञापन देने, ठेठ दिल्ली तक सम्बन्धितों के पास अपनी बुलन्द आवाज पहुंचाने के अभियानी आन्दोलन की उबाल अभी भी थमी नहीं है। ऐसे में प्रो. महावीर सरन जैन का प्रकाशित 'वैश्विक हिन्दी' शीर्षक आलेख उल्लेखनीय है जिसमें उन्होंने भाषा और बोली की तू-तू मैं-मैं को स्पष्ट किया है-

''भाषा और बोली के भेद का इतना प्रचार-प्रसार हुआ है कि आम धारणा बनगई है जिसके कारण व्यक्ति भाषा को शिक्षित, शिष्ट, विद्वान एवं सुजान प्रयोक्ताओं से जोड़ता है और बोली को अशिक्षित, अशिष्ट, मूर्ख एवं गंवार प्रयोक्ताओं से जोड़ता है। भाषा अपने भाषा-क्षेत्र में बोली जानेवाली समस्त बोलियों की समष्टि का नाम है। तत्तवत: बोलियों की समष्टि का नाम भाषा है। भाषा क्षेत्र की क्षेत्रगत भिन्नताओं एवं वर्गगत भिन्नताओं पर आधारित भाषा के भिन्न रूप उसकी बोलियां हैं। बोलियों से ही भाषा का अस्तित्व है। बोलियों के स्तर पर विभाजित भाषा के रूप निश्चित क्षेत्र अथवा वर्ग में व्यवहृत होते हैं जबकि प्रकार्यात्मक धरातल पर विकसित भाषा के मानक रूप, उपमानक रूप, विशिष्ट रूप भाषा क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं, भले ही इनके बोलनेवालों की संख्या न्यूनाधिक हो।'' (पृ. 73)

इसी क्रम में उन्होंने राजस्थान में बोली जाने वाली राजस्थानी में मारवाड़ी, मेवाती, जयपुरी तथा मालवी का उल्लेख किया है। राजस्थानी के सम्बन्ध में उन्होंने राजस्थानी के ख्यात विद्वान कन्हैयालाल सेठिया से जो वार्तालाप किया उसका उल्लेख करते जो बिन्दु रखे, उनका जिक्र किया। वे लिखते हैं-

''श्रीमद् जवाहराचार्य स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत विश्व शान्ति एवं अहिंसा विषय पर व्याख्यान देने सन् 1987 ईस्वी में लेखक का कलकत्ता (कोलकाता) जाना हुआ था। वहां श्री सरदारमलजी कांकरिया के निवास पर लेखक का संवाद राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए आन्दोलन चलाने वाले तथा राजस्थानी में 'धरती धोरां री' एवं 'पातल और पीथल' जैसी कृतियों की रचना करने वाले कन्हैयालाल सेठियाजी से हुआ। उनका आग्रह था कि राजस्थानी को स्वतंत्र भाषा का दर्जा मिलना चाहिए। लेखक ने उनसे अपने आग्रह पर पुनर्विचार करने की कामना व्यक्त की, मुख्यत: निम्न मुद्दों पर विचार करने का अनुरोध किया-

राजस्थानी भाषा जैसी कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है। राजस्थानी में निम्न क्षेत्रीय भाषिक-रूप बोले जाते हैं- (1) मारवाड़ी (2) मेवाती (3) जयपुरी (4) मालवी। इन विविध भाषिक रूपों को हिन्दी के रूप मानने की क्या आपत्ति हो सकती है।

यदि आप राजस्थानी का मतलब केवल मारवाड़ी से लेंगे तो क्या मेवाती, जयपुरी, मालवी, हाड़ौती, शेखावाटी आदि अन्य भाषिक रूपों के बोलने वाले अपने-अपने भाषिक रूपों के लिए आवाज नहीं उठायेंगे? भारत की भाषिक परम्परा रही है कि एक भाषा के हजारों भूरि भेद माने गये हैं मगर अन्तर क्षेत्रीय सम्पर्क के लिए एक भाषा की मान्यता रही है।

राजस्थान की पृष्ठभूमि पर आधारित हिन्दी कथा साहित्य एवं हिन्दी फिल्मों में जिस राजस्थानी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग होता है उसे हिन्दी भाषा क्षेत्र के प्रत्येक भाग का रहने वाला समझ लेता है। भारतीय भाषाओं के अस्तित्व एवं महत्त्व को अंग्रेजी से खतरा है। संसार में अंग्रेजी भाषियों की जितनी संख्या है, उससे अधिक संख्या केवल हिन्दी भाषियों की है। यदि हिन्दी के उपभाषित रूपों को हिन्दी से अलग मान लिया जाएगा तो भारत की कोई भाषा अंग्रेजी से टक्कर नहीं ले सकेगी और धीरे-धीरे भारतीय भाषाओं के अस्तित्व का संकट पैदा हो जायेगा।'' (पृ. 76)

प्रो. सरनजी के इस लेख से मुझे सन् 16 दिसम्बर 2018 में 'विचारमंच' की ओर से सम्माननीय सरदारमलजी कांकरिया ने कलकत्ता में कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार प्रदान किया तो दूसरे दिन सेठियाजी के सुपुत्र जयप्रकाशजी सेठिया मुझे और मेरे आत्मज डॉ. तुक्तक को अपने निवास पर लेगये। बड़ी देर तक सेठियाजी की यादों को विड़ोलते अन्त में मुझे उस आसन पर बिठाया जहां सेठियाजी बैठकर साहित्य सृजन करते थे। वह समय हमारी भावुकता का मौन उद्वेलन ही बना रहा।

याद यह भी पड़ रहा है कि सेठियाजी से मेरी पहली भेंट गोविन्द अग्रवाल और उनके भाई सुबोधजी ने अपने नगरश्री चुरू के एक समारोह में कराई थी जब मुझे स्वर्णपदक दिया गया था। उसमें दिल्ली के सुनाम साहित्यकार विष्णु प्रभाकर, स्वयं सेठियाजी तथा रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत भी थीं तब मैंने सेठियाजी से उनकी सृजनयात्रा को लेकर साक्षात्कार लिया था जो कई पत्रों में छपा। उसके बाद तो सेठियाजी, प्रभाकरजी तथा रानीजी से अन्त तक मेरा पत्राचार रहा जो मेरे संग्रह में शोभित है। रानीजी ने जब बगड़ावत महाकाव्य का सम्पादन किया तब उसके पाठ-सम्पादन में मेरे योगदान का उल्लेख भी किया। अस्तु।

बड़ी साइज की कुल 88 दमदार पृष्ठों की यह पत्रिका रमेश प्रसून का मुख्य सम्पादन लिये 4/ 75 सिविल लाइन्स, टेलीफान केन्द्र के पीछे, बुलन्दशहर-2030001 (उ.प्र.) से प्रकाशित है।

-म. भा.

समुद्रपार व्यापार और युद्ध के लिए बनी नौकाएँ

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

थल के बाद जल को आवागमन के लिए योग्य माना गया तो बांसों को बांधकर बेड़े चलाए गए। नाव भी अनूठी खोज है। नावों का विवरण वेदों में मिलता है : दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुम्। 'बौधायनधर्मसूत्र' में जिक्र इस तरह आया है-

समुद्र संयानम्।
नावाद्वीपान्तरगमनम्।

यों तो नाव का जिक्र गीता में भी है और पवन के जोर से नाव के शीघ्र हर लिए जाने के उदाहरण के रूप में है किंतु अच्छा विवरण वराह पुराण में है जहां समुद्रमार्ग से नावों में आनेवाले बहुमूल्य रत्नों का सन्दर्भ मिलता है। चोलों ने जब समुद्री मार्ग से सैन्य अभियान किया तो नौशक्ति को बढ़ाया गया था। सार्थों ने भी नावों का व्यापार के लिए प्रयोग किया। कई संदर्भ खोजे जा सकते हैं।

सोमेश्वर ने नौका, नौकाचालक, वेला तट, यात्री, तारक आदि का अनेकबार स्मरण किया है। भोजराज विरचित 'युक्तिकल्पतरु' में इसको निष्पद अर्थात् पांव रहित यान कहा गया है और पारिभाषित रूप में कहा कि अश्व आदि सारे यान पांवों वाले होते हैं किंतु नौका पानी पर ही संचालित होती है -

अश्वादिकन्तु यद्यानं स्थले सर्व प्रतिष्ठितम्।
जले नौकेव यानं स्यादतस्तां यत्नतो वहेत्।।

ग्रंथकार ने अनेक प्रकार की नावों का जिक्र किया है जो छोटी से लेकर बड़ी तक होती है। उनके नाम भी रखे जाते थे। मध्यकाल में एक दौर वह भी आया जबकि वाहन के रूप में डोला, सुखासन, पालकी, रथ-स्यंदन के साथ नाव को भी एक प्रमुख वाहन के रूप में स्वीकारा गया। इसी काल में नावों का कुछ ज्यादा ही महत्व बढ़ा तो मुहूर्त ग्रंथों में नौका प्रयाण, नौका घटन आदि के मुहूर्त भी तय किए गए। इनमें महाराष्ट्र के नांदी गांव के केशव दैवज्ञ और टापर गांव के नारायण दैवज्ञ के मुहूर्त तत्वम् और मुहूर्त मार्तण्ड मुख्य हैं। इस समय यमुना में सबसे अधिक नौका यात्रा होती थी। दिल्ली आदि से प्रयाग और आगे गमन के अनेक सन्दर्भ मैंने पढ़े हैं।

चित्र : पश्चिम समुद्र में नौकाओं से संघर्ष : मुंबई से प्राप्त विरगल पर उच्चित्रण।

शिल्परत्नम् में भी नौका निर्माण की विधि आई है और कहा गया है कि लाकुच नामक पेड़ के काष्ठ के फलकों से नाव को बनाया जाए और उसको उपवल्कल से वेष्टित करना चाहिए। यह लम्बाई वाली हो और बांस, आम आदि के काष्ठों का गोलाकारीय रचना में प्रयोग किया जाना चाहिए। इसको बांधने के लिए चमड़े की रस्सियों का प्रयोग किया जाना चाहिए और जलचर की तरह उसको तैराया जाना चाहिए : पिनद्धश्चर्मणा बाह्ये प्लवकोह्ययं जलेचर:।

(शिल्परत्नम : श्रीकृष्ण जुगनू,
द्वितीय खण्ड, दूसरा भाग)

यह संयोग ही है कि यह वर्णन 16वीं सदी का है जबकि इससे पूर्व तो पुर्तगालियों के आगमन से नावों के लिए तो लोहे की चद्दरों का प्रयोग आरंभ हो गया था और 'युक्तिकल्पतरु' में यह लिखा भी गया है -

लौह ताम्रादि पत्रेण कान्तलौहेन वा तथा।
दीर्घा चैवोन्नता चैति विशेषे द्विविधा भिदा।।

है न रोचक बात! जो ग्रंथ 16वीं सदी में लिखा गया, उसमें लोहे के प्रयोग का वर्णन नहीं है और भोजराज जिनका समय 11वीं सदी माना गया है, उनके लिखे या उनके नाम से लिखे ग्रंथ में लोह व तांबें की चद्दरों से नाव बनाने की विधि है। यही नहीं, यह भी कहा है कि लोहे वाली नावें कई बार चुंबकों से आकर्षित की जा सकती हैं और इससे वे संकट में पड़ जाती हैं। अनेक खतरे खड़े हो जाते हैं। विवरण कौन सा पुराना है, विचारणीय है मगर रोचक यह भी है कि निष्पद नावों ने हमें समुद्रमार्ग का आनंद भी कम नहीं दिया।

स्मृतियों के शिखर (163) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नीम की हवा : हजार रोगों की दवा

'बिना दवा नीम की हवा' कहावत के पीछे यही तथ्य है कि नीम की हवा में रहनेवाले को दवा की जरूरत नहीं। नीम का हर एक भाग आयुर्वेद में इस्तेमाल किया जाता है। नीम की छाल, पत्तियां, जड़ इत्यादि से औषधियां बनती हैं। नीम एक छायादार वृक्ष है। इसलिए गांवों में प्राय: बड़ी पोलों में नीम का वृक्ष प्रमुखता से मिलेगा।

हवा के झोंकों के साथ जब पूरा पेड़ झूमता है तब उसकी डालियों और पत्तियों की सर-सर आवाज का मधुरिम स्वर ही बड़ा सुहावना लगता है। फिर इसके सहारे चीड़े-चिड़ियों का हलरावण-दुलरावण और उनकी नोकझोंक को जिसने भी ध्यान से देखा है वह पक्षीजगत के कलरव-करिश्मों के अनेक क्रीड़ा-कौतुकों का सुखानन्द लिए रहता है। गीत भी है-

देखो म्हारे आंगणिये में उगी नीमड़ली
नीमड़ली वधै ज्यूं म्हारो वंश वधजावै
दूध दही सूं सींचा म्हारी प्यारी नीमड़ली।

नीम के नीचे अथवा नीम के सघन वृक्षों के बीच जगह-जगह जिन देवी-देवताओं की स्थापना की हुई होती है वह स्थान अथवा देवता ही नीम सन्दर्भित नाम का सूचक हो जाता है।

मेरे गांव कानोड़ के पास नीम वृक्ष के नीचे स्थापित देवता 'नीमड्या बावजी' के नाम से प्रसिद्ध हैं जबकि उदयपुर में देवाली-फतहसागर के पास की पहाड़ी पर की देवी 'नीमज माता' के नाम से जग जानी है। कार्यसिद्धि के लिए देवता के सिर नीम के चन्द पत्ते रखकर 'पाती' मांगी जाती है। यदि वह नीचे गिर आती है तो कार्य पूर्ण होने का योग माना जाता है। भोपा भी भाव में नीम की पाती दे मन में धारा काम पूर्ण होने को निश्चिंत करता है।

उदयपुर में शाकुन्तलम संस्था की संस्थापिका शकुन्तलादेवी ने बताया कि जब वह भारतीय लोककला मण्डल में थीं तब वहां के प्रदर्शन दल द्वारा देश के अनेक भागों में जो विविध नृत्य-नाटिकाएं तथा नृत्य प्रदर्शित किये जाते उनमें 'खड़ी नीम के नीचे' नामक नृत्य के प्रदर्शन बहुत सराहे गये। इसमें चार-चार महिला-पुरुष कलाकार मिलकर विविध पोशाकों में अपनी भाव मुद्राएं बनाकर समा बांध देते। नृत्य के प्रभावी बोल थे-

खड़ी नीम के नीचे म्हैं तो एकली
जातोड़े बटाऊ म्हांनैं ओळेदोळे देखली।

चैत्र मास में जब नीम अंकुराता है तब उसकी नव कोंपलें बांटकर छाछ में मिलाकर तीन दिन सुबह पीने से पूरे वर्ष शरीर में ठण्डक बनी रहती है। इससे शरीर पर विपरीत असर डालने वाले जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। इसके लिए किसी तरह का कोई रखा-परहेज भी नहीं रखा जाता।

नीम कड़वा तो होता ही है पर एक नीम मीठा भी होता है। इसे 'नीमड़ी' कहते हैं जो नीम की अपेक्षा कम फूलती-फलती है। इसकी पत्तियों में बड़ी ही मीठी खुशबूदार महक होती है जो रसोई में निर्मित कढ़ी-दालजनित सब्जियों का स्वाद बढ़ा देती है।

नीम का फल 'नीमोली' होता है। यह जब लगता है तो छोटे-छोटे बूंदकों की तरह लटकता बड़ा अच्छा लगता है। पकने पर पीला शहद सा लसदार मीठा होकर बड़ा ही स्वादिष्ट होता है।

इसका बीज कड़वा होता है। सूखने पर इसका ऊपर का छिलका हटा गूदा को बांट लोचदार बना फोड़े-फूंसियों पर लगाया जाता है। इसे सिर पर बालों में लगाकर बालजनित जुंएं तथा छोटी-छोटी लीकें नष्ट की जाती हैं। सिर पर लगाने से ठण्डक रहती है और किटाणु तथा उनसे सम्बन्धित कचर्‌ये जैसे फोड़ों की बीमारी से बचाव होता है।

मैदानी इलाकों में जहां नीम बड़ी तादाद में पाया जाता है, ऊंट का प्रमुख भोजन है। इससे ऊंट का अपशिष्ट मींगणों की तरह बाहर आता है। ये मींगणे आंवले के आकार के होते हैं। सूखने पर ये अच्छे खाद के साथ लकड़ी की जगह जलाने के काम आते हैं। ये अन्य दृष्टि से भी उपयोगी हैं।

मेरे गांव कानोड़ में एक उत्तमबा थे जो पास के पहाड़ी गांव टेकण में व्यापार करते थे। वे जब गांव आते, ऊंट पर सामान लादकर लाते-लेजाते। वे तेजरा नामक ताव यानी बुखार की कहानी सुनाकर रोगी को रोगमुक्त करने के उस्ताद थे। ऐसी स्थिति में सुबह मकान के बाहर बने बासी चबूतरे पर रोगी को बिठा कहानी सुनाते। साथ में एक कवेलू पर रखे अंगारे पर लोबान की धूप चलती रहती। जब कहानी समाप्त हो जाती तो रोगी वहां से तुरताफुरता अपना रास्ता पकड़ता।

पीछे से उसकी पीठ पर ऊंट के मींगणे दागे जाते और दूसरे ही दिन रोगी का हर तीसरे दिन आने वाला तेजरा बुखार नौ-दौ ग्यारह हो जाता। अपने बालपन में मैं भी उत्तमबा की इस कहानी-कथन-क्रिया का साक्षी रहा और वह कहानी भी लिपिबद्ध की। कहानियों का चमत्कार कई रूपों में मिलता है। तेजरा से तात्पर्य हर दो दिन के बाद तीसरे दिन बुखार आना।

काष्ठशिल्पी मांगीलाल मिस्त्री ने बताया कि नीम की

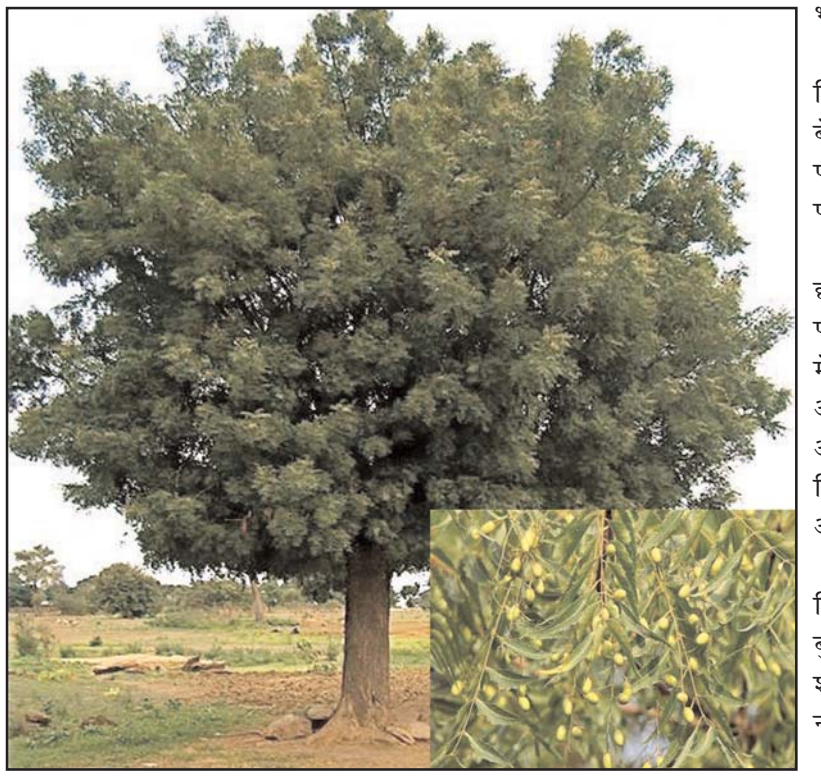

लकड़ी, छाल, पत्ता, कोंपल, फूल हर चीज काम की, उपयोगी है। सबसे अच्छी बात तो यही है कि इसमें कीड़ा नहीं लगता। लकड़ी सुलती नहीं, मजबूत रहती है और वर्षों चलती है। रथ, गाड़ी, वेवाण सब इसी के बनते हैं।

बैलगाड़ी के नीचे के आधार स्तम्भ के रूप में जो धरूंडा होता है, वह मुख्यत: नीम की लकड़ी का बना होता है। उसका नाम सुनते ही मुझे एक घटना का स्मरण हो रहा है। यह प्रसंग मुझे नन्द चतुर्वेदी ने सुनाया था जो उन्होंने अपनी माताजी से सुना था।

उसके अनुसार प्राचीन समय में एक सेठजी परदेश से अपनी कमाई का गाड़ा भर घर लौट रहे थे। रास्ते में संध्या ढलते उन्हें लगा कि गांव दूर है और रात्रि का सफर ठीक नहीं है अत: कहीं विश्राम कर लेना ही उचित है। वे इसी सोच में थे कि रास्ते के एक गांव में पटेलजी की एक पिरोळ देखी। उसमें एक बड़ा-सा नीम का वृक्ष लहलहा रहा था। उन्होंने विचार किया कि रात्रि विश्राम के लिए यह पिरोळ ही श्रेष्ठ है।

पिरोळ में नीम के नीचे शानदार चबूतरा था। सेठजी ने वहीं डेरा डाल दिया। नौकरों ने पटेलजी के मेहमान समझ सेठजी की अच्छी खातिरदारी की। अच्छा भोजन कराया। सोने के लिए साफ-सुथरे बिस्तर बिछाये। सेठजी ने रात्रि आराम से व्यतीत की।

पटेलजी कहीं बाहर गये थे और घर की औरतें समधीजी से परिचित नहीं थी सो भेंट नहीं कर पाई। सुबह नाश्ता पानी कराने के बाद सेठजी प्रस्थान करने को तैयार हुए। घर-धणियाणी ने नौकर से पूछवाया कि सेठजी कौन हैं और कहां से पधारना हुआ है ताकि पटेलजी के आने पर उन्हें बताया जा सके।

इस पर सेठजी बोले, 'मेरा तो पटेलजी से कोई परिचय नहीं है पर रात यहां विश्रामा करने यह नीम का वृक्ष ठीक समझा कारण कि मेरी गाड़ी का धरूंडा नीम का है और आपके यहां भी यही वृक्ष लहलहा रहा है। यही सोच मैं यहां आ गया। पटेलजी के नहीं होते भी जो आवभगत और मेहमानदारी हुई उससे तो मेरा सम्बन्ध इस घर से स्थायी बन गया है।' यह कह सेठजी ने अपनी राह पकड़ी।

मेरे अपने जीवन में नीम का स्थायी भाव, स्थायी स्मृति के साथ एक ऐसा स्थायी चिन्ह छोड़े है जो ताजीवन मेरे साथ बना रहेगा। कोई सात-आठ वर्ष की उम्र में, गर्मियों की छुट्टियों में मैं बम्बोरा अपने समधी के घर रह लौटा तो मेरे पांव की एड़ी के हिस्से में पतासे सा एक फफोला उठा। पकने पर वह फूटा तो उसमें से एक कीड़े ने मुंह निकाला। समझेबुझों ने कहा, यह नारू है। तब हमारे उधर इसे 'वारा' कहते थे।

जरा सा छेड़ने पर वह भीतर चला गया फिर निकला तो उसे पकड़ धीरे-धीरे बाहर लाना शुरू किया तो वह टूट गया। यह सफेद मोटे धागे जैसा कीड़ा होता है जो पूरे शरीर के किसी भी हिस्से में निकल सकता है।

पूरा निकालने पर यह एक मीटर से भी अधिक लम्बाई लिये होता है और शरीर में बुरी तरह फंसा रहकर भयंकर बेचैनी दिये रहता है। इससे रोगी का चलना-फिरना, खाना-पीना, सोना-उठना सब दूभर हो जाता है। यह रोग अनछाने पानी पीने से होता है।

कहावत भी है- 'सग्गो कीजै जाण ने अर पाणी पीजै छाण ने' अर्थात् किसी से सम्बन्ध पूरी जानकारी कर और पानी छानकर पीना चाहिए। इसीलिए शहरों की अपेक्षा गांवों में इसकी बीमारी अधिक फैली होती थी। तब ऐसे अस्पताल और न ऐसे डॉक्टर थे जो इसका माकूल इलाज कर सकें। अड़क इलाजी थे जो भागजोग से नारू निकाल देते पर निकालते समय वह टूट जाता तो और अधिक पीड़ा देता और अपना रास्ता बदल देता।

मेरा नारू दो-तीन बार टूट गया सो दो-तीन जगह निकलने को हुआ पर पूरा नहीं निकला सो डेढ़ माह तक बुरी तरह बिस्तर पर पड़ा कराहता रहा। मां प्रतिदिन सुबह-शाम नीम के पत्ते तोड़ लाती और खौलते पानी में गर्म कर नारू की जगह मोटा पाटा बांध देती।

इससे उसका ताप देर तक गर्मी दिये रहता। फिर एक कवेलू को गर्म कर मेरे पाटे पर रख बड़ी देर तक सेक करती। इसका असर यह रहा कि नारू बाहर तो नहीं निकल पाया पर भीतर-ही-भीतर जलभुन कर खाक हो गया। ऐसे तीन निशान बचपन से मेरी ऐड़ी के हिस्से पर अभी भी बने हुए हैं।

नीम के सम्बन्ध में डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' की यह टीप भी उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं- ''नीम सीम चेचक से बचाए रखती है। बारिश में इसके नीचे भीगना व्याधिहारी माना जाता है। मां उसके पत्तों का धुंआ करके बुखार और मयदी ताव उतार देती और कहती कि नाना हो तो नीमड़े जैसा और नानी हो तो नीमड़ी जैसी। गौरी की पूजा में नीम की पत्तियां और डाली लाई जाती है। पीपल ने यदि गौतम को ज्ञान दिया तो नीम ने गौरी को कैलास।''

सामन्तीकाल में जब किसी को देश निकाला देना होता तब उसे काले कपड़े पहनाकर, मुंह काला कर, गधे पर उल्टा बिठा, उसकी पगड़ी में नीम की डाल का छोगा लटका कर सीमा बाहर कर दिया जाता। यह ऐसा दण्ड होता कि दण्डधारी पुन: उस सीमा में प्रवेश नहीं कर सकता था। उदयपुर में तो ऐसे निष्कासन के लिए सीमा पर जो पोल थी उसका नाम ही दण्डपोल था जिसे मैंने भी देखी है। आजादी के बाद तो जब शहर का विस्तार हुआ तो ऐसी स्मृतिसूचक कई धरोहरें समाप्त कर दी गईं।

नीम की डाल पर झूला डाल उस झूले पर झूलने के अलावा भांति-भांति के कसरती करतब करने, ऊंचे-नीचे, उल्टे-सुल्टे डाके लेने, हवा में झूलने, आकाश नापने, स्पर्धामूलक करिश्में करने, झूले के रस्से से नीम की पाटली पर एक को बिठा, उसके पीछे दूसरे द्वारा खड़े रहकर पांवों से झुलाने याकि हींडाने से हर नर-नारी, बालक-बालकी लुत्फ उठाते थे।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 मई 2023

सम्पादकीय

सम्मानों की होड़, पुरस्कारों की बहार

वर्ष के बारह माह में मार्च का महीना अपने अलग ढंग से अहमियत रखता है। हिसाब-किताब की दृष्टि से वर्ष का यह आखिरी महीना है। इस दृष्टि से इस माह में वर्षभर के जो लेनेदेन, अनुदान-सहयोग प्राप्त हुए होते हैं उनका लेखाजोखा करना पड़ता है। नफा-नुकसान की दृष्टि से भी आकलन करना होता है और सरकारी कायदे-कानून को ध्यान में रखते हुए वाजिब कमाई के अलावा जो आय की हुई होती है उसका टेक्स आदि भी चुकाना होता है। बैंकों और साहूकारों से जो लोन लिया होता है उसका पाई-पाई का हिसाब भी करके निश्चिंत होना पड़ता है।

बहुत सी निजी संस्थाएं, सरकारी संस्थान तथा सार्वजनिक ट्रस्ट आदि विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट उपलब्धिपरक व्यक्तियों तथा संस्थानों को उनके अनुकरणीय कार्य-कौशल पर तरह-तरह के सम्मान तथा पुरस्कार प्रदान करते हैं। यह कार्य मुख्यत: सरकार से जुड़े संस्थान प्रतिष्ठान मार्च माह में ही सम्पन्न करते हैं। इसलिए सम्मानों और पुरस्कारों की दृष्टि से यह महीना बड़ी चहल-पहल लिये रहता है। इसमें सम्मान प्राप्तकर्त्ता और प्रदाता दोनों ही खुशमिजाज नजर आते हैं। तरह-तरह के शॉल-दुशालों, स्मृतिचिन्हों तथा सम्मानपत्रों के साथ प्रतीक चिन्ह, पगड़ी, साफा तथा मुख्यत: देय राशि की ओर सर्वाधिक ध्यान रहता है।

यह कलयुग है सो कलयुगशाही का प्रभाव तो गाहेबगाहे मिलता ही है। सम्मानों का प्रारम्भ तो नेक इरादों और ईमानदार चारित्रिक मिजाज के लिए पक्षपात विहीन ही रहता है पर धीरे-धीरे इनका स्वरूप-रूप कुछ अरूप भी होता लगता है। सम्मानप्राप्तों में अपना-पराया का भाव तो सदैव ही रहता आया है पर आटे में नमक की तरह तो सभी को सुहाता है पर कभी-कभी जब नमक की मात्रा बढ़ती नजर आती है तो उसकी प्रतिक्रिया हुए बिना भी नहीं रहती।

कभी-कभी तो सारी हदें पार भी देखी जाती हैं, चाहे वे अपवादस्वरूप ही हों, जब समीक्षक कहने लगते हैं कि तब आटा मुख्य था, नमक उसकी मिलावटी मात्रा ही थी जैसे रोटी आदि में होती है पर दृश्य उल्टा होकर नमक में आटा की मात्रा बन आती है तब बवंडर भी होना स्वाभाविक है। इन सम्मानों की विधिवत प्रक्रिया रहती ही है पर कई बार उसकी खानापूर्ति भी हो जाती है। कभी-कभी जब गैर समझ के लोग हावी होने लगते हैं तब चयन भी घोड़े की जगह गधे का हो जाना स्वाभाविक होता है।

यह सब तो ठीक है पर कभीकभाक ही सही, जब योग्य पात्र यूं ही जमीं में गड़े सिक्के की तरह पड़ा रह जाता है और अति चलन वाला चालबाज खनखनाता सिक्का अपना वर्चस्व दिखाने लगता है ऐसे में अफसोस होना स्वाभाविक है।

यह भी विडम्बना है कि सम्मान-पुरस्कार प्राप्ति के लिए व्यक्ति स्वयं आवेदन करे या उसका प्रिय चहेता और कोई उसके लिए प्रस्तुति दे। इन दोनों ही परिस्थितियों में कई बार कई कारणों से व्यक्ति स्वयं तो अपने लिए आवेदन करेगा ही नहीं पर संकोचवश वह दूसरों से भी अपने लिए कैसे, क्यों कहेगा?

कुछ संस्थाओं में उन्हीं की ओर से मनोनीत व्यक्ति ऐसे योग्य होनहार सुनामों को वरण करता था। कोई भी नामचीन व्यक्ति किसी का नाम सुझा देता तो उस पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाता था पर अब वह बात नहीं देखी जाती है।

प्रान्तव्यापी सम्मानों और भारतव्यापी सम्मानों में भी कभी-कभी राजनीति अधिक हिस्सा लेने लग गई है। भाईचारा, अपना-पराया तथा आपसी रिश्ते निभाने या गुप्त समझौते की चाणक्य नीति भी कहीं-कहीं उजागर होती रही है पर अब कोई किसी की सुनता नहीं, सुन भी लेता है तो बेपरवाह बना रहता है। जैसे वह नगारे का ढोल हो गया है। तब भी सम्मानों और पुरस्कारों की यह परम्परा राष्ट्र और समाज में एक नई चेतना, नई प्रेरणा और एकसूत्रता में महान राष्ट्र की प्रतीती लिये सब ओर देखी जा रही है।

जब समय ही बेरंगा-बेढंगा हो तो सारी स्थितियां-परिस्थितियां उसी चश्माई रंग में रंगी मिलेंगी।

मुलाकातें फकत बातें

एकबार एक बहुत बड़े संस्थान ने एक बहुत बड़ी कार्यशाला आयोजित की जिसमें सारे देश के अच्छे-खासे लोग एकत्र हुए। अन्तिम समापन समारोह में कार्यशाला की उपलब्धि पर कई लोगों ने कसकर प्रशंसा-दर-प्रशंसा की। अन्त में कवि नंद चतुर्वेदी से कुछ बोलने को कहा गया तो उन्होंने यह शेर सुनाया-

मुलाकातें मुलाकातें मुलाकातें।
फकत बातें फकत बातें फकत बातें।।

इसे सुन जहां संभागी ठहाके लगा रहे थे वहां आयोजकों की स्थिति फिल्म उतारने जैसी थी।

उम्मीदवार कैसा हो ?

अब समय आ गया है कि भारतीय लोकतन्त्र के उम्मीदवार की भी अपनी आचार संहिता हो। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने वाली लड़की का वर कैसा हो, इसके लिये

प्रत्येक प्रांत में तरह-तरह के गीत प्रचलित हैं। लड़कियां उन गीतों को गाकर अपनी चाह का वर प्राप्त करने के सकेत दे देती हैं। तोरण आये वर की महिलाएं कई प्रकार की परीक्षाएं लेती हैं। चवरी में भी और उसके बाद भी कई परीक्षाओं के दौर से वर को गुजरना पड़ता है।

यही स्थिति कम ज्यादा कर उम्मीदवार की है बल्कि उसकी जिम्मेदारी तो और भी अधिक है। वर एक कन्या के लिये है। यहां उम्मीदवार कितनी जनता का प्रतिनिधित्व करता है! चुनाव में खड़े होने पर वह नाना प्रकार के वादे करता है। कसमें खाता है और अपने को नन्हा से नन्हा बनाकर वोट प्राप्त करने का हथकंडा प्रस्तुत करता है और जब भोलीभाली जनता उस अति भोले! अति विनीत!! और अति गरीब!!! उम्मीदवार को वोट देकर विजयी बना देती है तो न जाने उम्मीदवार को क्या हो जाता है।

वह बहुत कुछ बदल जाता है और उसका हुलिया ही पहचान में नहीं आता है। कभी-कभी वह अपना सम्पूर्ण दल और बल ही बदल देता है। ऐसे दल बदलुओं के लिये एकबार जूते ठीक करने वाले ने कहा था- साब ये बाप बदलू हैं। इनका नाम लेना भी अनिष्ट सूचक है। तब मैंने पूछा- उम्मीदवार कैसा हो? उसने कहा- जो जनता की उम्मीदों को पूरी करे। उन्हें पूरी करने के लिए अपने को वारदे, न्यौछावर करदे।

कितनी सीधी और सही व्याख्या है इनके मन में एक उम्मीदवार की! सुबह की चाय पर होटल में एक बूढ़ा पटेल भी इसी बहस में छेड़ दिया गया। तब पटेल ने अपने जूते में से पांव और आंखें गड्ढ़ों से निकाल कर कहा- उम्मीदवार ठेठ तक जनता का उम्मीदवार ही बना रहे। वह नेता नहीं बन जाय। इसी बात को सुन मुझे याद आया उदयपुर का वह कविसम्मेलन जिसमें अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात हास्य-व्यंग्य कवि गोपालप्रसाद व्यास ने कहा था-

नेता और आदमी में क्या अन्तर है?
आदमी नेता हो सकता है, नेता आदमी नहीं।

अच्छे उम्मीदवार अच्छा राष्ट्र और समाज बनाते हैं। बिगड़े हुओं को बोतल में बन्द कर सकते हैं मगर जब वे स्वयं ही बिगड़ जायें तो सारा हिसाब-किताब ही लिखा-अलिखा बराबर हो जाता है। कवि आनन्द मिश्र की तब की लिखी ये पक्तियां भी आज और अधिक टीक-सटीक हुई जा रही हैं। उन्होंने लिखा-

व्यापारी ईमान खा रहा है। विधायक विधान खा रहा है।
और कोई-कोई तो यहां ऐसा है जो समूचा हिंदुस्तान खा रहा है।।

- डॉ. तुक्तक भानावत

गीत उदयपुर रै घाटां रौ

पाळ पीछोळा वाळी माथै, घाट अनूठा जाण
राम घाट पर राम बिराजै, पीपळ सत परमाण ।। 1।।
पाल बिचाळै घाट लरजतौ, इमली घाट री आन
बंसी घाट पै गिरधर नागर, सजै - सुरंगी - तान ।। 2।।
डरपावै जद लाल घाट तो, नांव - घाट - तिरावै
बोरसली रौ घाट घमकतौ, मोती मस्जिद सिरावै ।। 3।।
रूपाळी गजबण पटराणी, गणगौर तणै मन भावै
चांदपोळ पै चांद चमकतौ, गीत - प्रीत रा गावै ।। 4।।
सरूप-सागर घाट सोवणौ, भूपाल घाट भड़कीलौ
अंगरेजां री आंट निराळी, साख भरै जल नीलौ ।। 5।।
पसुघाट पै जीव जीनावर, जीवै - जीया - जूण
ब्रह्मपोल री बारी न्यारी, नाथ - घाट नव खूण ।। 6।।
महाराजा रौ घाट अणूठौ, माणस री मरजाद
माजीसा रौ घाट मुळकतौ, जाम्बू घाट आबाद ।। 7।।
घाट सुरंगौ गजबण थांरौ, रस भरियौ रूपाळौ
नेह - नीर निजर नित आवै, पीवै किस्मतवाळौ ।। 8।।
राम - द्वारौ घाट राम रौ, हड़मत घाट हेवाड़
पंच देवरिया - परमेसर, अमर - घाट मेवाड़ ।। 9।।
मही मेवाड़ घाट रै माथै, श्री अेकलिंग रौ नाथ
सत जीवण री जोत जगावै, मिनख नवावै माथ ।। 10।।
घाटां री कीरत गरबीली, घाटां हित घमसांण
घाटां सारूं बजै त्रंबाळक,अनमी भड़ आपांण ।। 11।

- डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

हे जगपति!

जगपति!
करणी पार उतरणी।
आपने किया वो आप भुगतोगे
मैंने किया मैं
आपका किया मैं नहीं भुगतूंगा।
आपको अपनी करणी का फल
भुगतना पड़ेगा...
भीखा चांद सूरज में भी पड़ता है!
वह भगवान को भी ढूंढ लेता है।
गरीब आदमी की दुशीर्ष लगेगी !
जगपति!
गरीब रो देगा तो जड़ा मूल से खो देगा!

-बी.एल.माली 'अशांत'

एचडीएफसी बैंक स्मार्ट साथी लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने एक नया डिजिटल डिस्ट्रीब्यूशन प्लेटफॉर्म (डीडीपी)- 'एचडीएफसी बैंक स्मार्ट साथी' लॉन्च किया है। ये एक ऐसा अत्याधुनिक बैंकिंग सॉल्यूशन है जो कि काफी

मजबूत और डिजिटल फार्मेट पर बनाया गया है। यह प्लेटफॉर्म अपने सभी उपयोगकर्ताओं को सुरक्षित और उपयोग में आसान अनुभव प्रदान करता है। नया लॉन्च किया गया प्लेटफॉर्म एचडीएफसी बैंक के ग्राहकों की तेजी से बदलती जरूरतों को पूरा करने वाले इनोवेटिव सॉल्यूशंस प्रदान करने की दिशा में एक नई और बड़ी उपलब्धि है।

वित्तीय सेवा विभाग के सचिव विवेक जोशी और सुश्री स्मिता भगत, ग्रुप हेड गवर्नमेंट एंड इंस्टीट्यूशनल बिजनेस, वैकल्पिक बैंकिंग चैनल और भागीदारी, समावेशी बैंकिंग समूह और स्टार्ट-अप, एचडीएफसी द्वारा दिल्ली में 'एचडीएफसी बैंक स्मार्ट साथी' का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर वित्तीय सेवा विभाग के संयुक्त सचिव मुकेश बंसल, एचडीएफसी बैंक के वरिष्ठ अधिकारी दिनेश लूथरा और अजय शर्मा उपस्थित थे।

विवेक जोशी ने कहा कि इस तरह के डिजिटल प्लेटफॉर्म कैशलेस अर्थव्यवस्था और सच्चे डिजिटल वित्तीय समावेशन के भारत के दृष्टिकोण को पूरा करने में योगदान देंगे। एचडीएफसी बैंक स्मार्ट साथी बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं को उपलब्ध कराने में योगदान देगा, विशेष रूप से ग्रामीण ग्राहकों के लिए ऋण, जो हमारे देश के विकास में मदद करेगा। हालांकि, कैशलेस भारत को बड़ी सफलता बनाने के लिए मंडियों में लेन-देन करने वाले किसानों जैसे कुछ ग्राहक वर्गों में अभी भी व्यवहारिक परिवर्तन आवश्यक हैं। बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट इस व्यवहार परिवर्तन को लाने में मदद करेंगे।

सुश्री स्मिता भगत ने कहा कि अगले 12 से 18 महीनों में हमारी शाखाओं और एजेंट नेटवर्क के संयोजन के माध्यम से दो लाख गांवों तक पहुंचने की योजना है। इस प्लेटफॉर्म का शुभारंभ इस उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अपना देश अपनी संस्कृति

राजा वासक का वैभव स्थल

मेवाड़ में कभी राजा वासक का वैभव-पराक्रम दूर-दूर तक अपना प्रभाव लिये था। आदिवासी भीलों के गवरी नृत्यानुष्ठान में भारत-गाथा में वर्णित राजा वासक का पायदान तो ठेठ पाताल तक था। वहां उसकी बाड़ी में अनेक तरह के पेड़-पौधे तथा फुलवाड़ी की महक अन्य लोकों तक महकती थी। मृत्युलोक में पहला वटवृक्ष वहीं से लाया गया था। उसके साथ पीपल, बड़, केला, नीम जैसे वृक्ष और फूलजनित सुगंधित पौधे आये।

कहा जाता है कि धरती पर राजा वासक का स्थान विशनगर नाम से प्रसिद्धि लिये था। यह नगर रियासतकालीन मेवाड़ के सौलह प्रमुख ठिकानों में से एक कानोड़ से सत्रह किलोमीटर दूर उत्तर में था जो वर्तमान में बलीचा नाम से जाना जाता है। यहां उस काल के अवशेष उसकी विशालता और वैभव का बखान करते देखे जा सकते हैं। महाभारत तथा पुराणों में इस नगर का नागराज वासक की राजधानी के रूप में वर्णन मिलता है।

यहां के लोगों की मान्यता है कि तब शहर में 350 मन्दिर थे जो अपार धन-सम्पदा लिये थे। मुगल बादशाह ने यहां के मन्दिरों को भी तहसनहस करने में कोई कसर नहीं रखी। यह तो ठीक रहा कि लोगों ने देव-मूर्तियों को रामकुण्ड में छिपा दिया। यहीं बांबी पर एक छोटा सा मन्दिर बना हुआ है। प्रसिद्धि है कि राजा वासक नाग के रूप में यहां विचरण करते हैं।

जनश्रुति के अनुसार यहां राजा वासक उज्जैन से आकर बसे। एक डांगी पटेल ने वासक के लिए अपनी जमीन दान कर दी। यहीं राजा ने अफीम, गन्ना, पान, तिल्ली की खेती प्रारम्भ की और एक चौपाया भैंस उपजाई। इस कारण आज भी यहां का दूध-घी-मावा बाहर उदयपुर-प्रतापगढ़ तक सप्लाई होता है। मैंने इस स्थल का 18-19 सितम्बर 2020 को अध्ययन किया।

पत्रकार कमलाशंकर श्रीमाली ने बताया कि राजा वासक मध्यप्रदेश के हापलिया, हगवाड़िया, पीपली, मल्हारगढ़ होते निम्बाहेड़ा के पास वाड़ी, कचुमरा होते बलीचा और वहां से जयसमंद के पास वारपुरा के सुप्रसिद्ध गातोड़जी पहुंचकर अपना स्थान बनाया। यहां उनका प्रसिद्ध मन्दिर है जहां बांबी है। यह बांबी ठेठ उज्जैन के महाकालेश्वर तक की पहुंच लिए है।

गातोड़ में वासक रविवार को एक भोपे के शरीर में दर्शन देते हैं। चोरी करने वाले संदिग्ध व्यक्ति को बांबी में हाथ डालने को कहा जाता है। इससे सत-असत का पता चलता है। चोरी किये व्यक्ति का हाथ बांबी में नाग द्वारा डसा जाकर लहुलूहान कर दिया जाता है।

गातोड़जी की प्रसिद्धि इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है कि मोलेला गांव के कुम्हारों द्वारा विविध देवी-देवताओं की माटी की जो प्रतिमा विशेष संस्कारों के साथ बनाई जाती है और यहां से जहां-जहां भी गांवों में इनकी प्रतिष्ठा की जाती है वे मोलेला से विशिष्ट अनुष्ठान द्वारा ले जाई जाकर सर्वप्रथम गातोड़जी ले जाती हैं। यहां से देवता द्वारा मान्य होकर ही सम्बन्धित देवरों में उनकी विधिवत स्थापना की जाती है। मोलेला और गातोड़जी का लेखक ने विधिवत अध्ययन कर विस्तृत जानकारी एकत्र की और अनेकबार लेखन किया।

बलीचा में वासक की पूजा का जिम्मा सम्भाले नन्दराम वैष्णव ने बताया कि प्रतिवर्ष नागपंचमी को यहां बड़ी तादाद में मेलार्थी जुड़ते हैं। पहाड़ियों से घिरी राजा वासक की बाड़ी सदैव हरीभरी रहती है।

सुना गया कि एकबार कानोड़ के ठिकानेदार को वासक ने सपना दिया कि उनके बलीचा स्थित खण्डहर में अकूत सम्पत्ति का खजाना है सो एक ही रात में, बिना किसी को भनक दिये, कानोड़ के राजमहल में लाया गया। सपने के अनुसार रातभर एक हथिनी इस सम्पदा को ढोती रही किन्तु सुबह होते-होते वह थककर इतनी चूर-चूर हो गई कि उसका प्राणन्त हो गया। बलीचा में ही नहीं, कानोड़ के जन-जन में भी यह बात फैली हुई है। कानोड़ मेरी जन्मभूमि है।

इतनी सम्पत्ति पाकर रावले के ठिकानेदार रावजी ने महल के पास का स्थल बालिका शिक्षा निमित्त अग्रसेन कुंवर के नाम विद्यालय के रूप में भेंट कर दिया जहां वर्तमान में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित है।

भविष्य किसके हाथ में!

-डॉ. अनिरूद्ध पुरोहित-

पत्नी अपना हाथ ज्योतिषी को दिखा रही थी। तभी ज्योतिषी ने उसे उसके पति के भविष्य के बारे में भी बताना शुरू किया। तब पत्नी बोली- मुझे मेरे पति का भूतकाल बताएं महाराज, उनका भविष्य तो मेरे हाथ में है।

हर अभिभावक और विशेषज्ञ यदि यह विश्वास पैदा कर ले कि बच्चे का भविष्य हमारे हाथ में है तो बहुत कुछ किया जा सकता है। आप अपने बुद्धिमत्तापूर्ण तरीकों से बच्चे का भविष्य बहुत कुछ अच्छा बना सकते हैं।

एक पत्ते से 'एकपन्या' बावजी

गांवों के देश भारत में कोई गांव ऐसा नहीं मिलेगा जहां किसी-न-किसी लोकदेवी-देवता का स्थान न हो। यह भी सच है कि देवता की मान्यता के बिना वहां का पत्ता भी नहीं हिलता।

देवताओं के नाम भी बड़े विचित्र मिलेंगे। किसी घटना के साथ यदि कोई किसी व्यक्ति या समूह के साथ कोई उल्लेखनीय प्रसंग घटित हो जाय तो वे उससे सम्बन्धित देवता का नामकरण कर देंगे। धीरे-धीरे वे देवता अपनी आस्थाजनित लोकप्रियता का दायरा बढ़ाते हुए सबके मान्य होते चलेंगे।

विवाह पूर्ण होने पर वर-वधू रास्ते के किसी पत्थर के सिन्दूर मालीपना लगाकर रास्ते में ही उसकी पूजा 'भैरू' के रूप में करते हैं तब वह देवता उसी समय विशेष का देव बन जाता है। ऐसे अनेक देवता मिल जायेंगे जिनका कहीं कोई उल्लेख, ठौर ठिकाना तथा इतिहास नहीं मिलेगा। उनके पीछे छिपा भाव भी कईबार कोई नहीं जान पाता है किन्तु उनकी मान्यता चलती रहती है। उनका फल भी लोग महसूस करते रहते हैं।

अधिकांश देव जंगलों और विरान स्थानों में स्थापित किये मिलेंगे ताकि जंगल सुरक्षित रहें और पर्यावरण की भी सुरक्षा हो सके। किसी वृक्ष को बचाने के लिए उसके पास किसी देवता की स्थापना कर दी जाती है। कहीं उस वृक्ष के तने में ही सिन्दूर-पन्नी लगाकर देवी-देवता का स्थान बना लिया जाता है। इससे लोग देवता का वास समझ उस पेड़ को क्षति नहीं पहुंचाते हैं। इसके विपरीत उनमें अनिष्ट या कि अमंगल होने का भय बना रहता है।

ऐसा ही एक मन्दिर उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर कुम्भलगढ़ रोड़ पर कठार ग्राम पंचायत के मारूवास गांव में 'आनणा बावजी' का है। यहां की खासियत यह है कि कोई भी पेड़ चाहे हरा या फिर सूखा ठूंठ ही क्यों न हो, नहीं काटा जाता।

यहां तक कि वहां होने वाले निर्माण कार्य की दीवालों और छतों को बनाने में भी पेड़ों की शाखाओं को यूं-का-यूं साबूत रहने देकर दीवालों की तड़ों और छतों के छेदों से निकाला गया है। इससे वृक्ष वनस्पतियों के साथ मानव के आत्मीय तादात्म्य की भावना का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

ऐसा ही एक स्थल आनणा बावजी के पास ही जंगल में बने देवरे में 'एकपन्या बावजी' का है। यह पुराना देवरा है। देवरा कवेलू की छत लिये है। इसके सामने की दीवाल में ढाक का पेड़ है। कहावत तो 'ढाक के तीन पात' की है अर्थात ढाक वृक्ष का प्रत्येक पत्ता तीन-तीन की जोड़ लिये होता है परन्तु इस ढाक के तो तीन की बजाय एक ही पात है।

मेवाड़ में ढाक को खाखरा तथा पेड़ के पत्ते को पाना अथवा पन्या तथा देवता को बावजी कहा जाता है। इस ढाक के एक पाना होने के कारण उसके पास के देवता का नाम भी 'एकपन्या' पड़ गया। देवता के प्रति गहन आस्था और विश्वास के रहते कोई भी हरा तो ठीक पर सूखे पेड़ को भी नुकसान पहुंचाने की कल्पना तक नहीं कर सकता। सारे निर्माण कार्य देवता की इजाजत से होते हैं।

देवता की इजाजत अथवा स्वीकृति के लिए बावजी से पाती मांगी जाती है। यदि किसी को कोई निर्माण कार्य करना है और पेड़ बाधक बन रहा है तो निर्माणकर्त्ता देवता के समक्ष उपस्थित होकर वहां उपस्थित भोपाजी से निवेदन करेगा। भोपा देवता का वह प्रतिनिधि होता है जिसके शरीर में देवता का प्रवेश होकर वहां उपस्थित भक्तों से सवाल जवाब कर उनकी समस्याओं का निराकरण करता है।

ऐसी स्थिति में भोपा देवरूप उसकी प्रतिमा के ऊपरी सिरे 'शीश' पर कोई फूल-पाती रख देता है। यदि वह फूल-पाती नीचे गिर जाती है तो हां अथवा सोचा कार्य पूरा करने की स्वीकृति समझ ली जाती है। पाती अथवा पत्ती नहीं गिरने की स्थिति अस्वीकृति समझी जाती है।

यहां के पुजारी लालू गमेती ने 07 जून 2021 को बताया कि कोई चारेक वर्ष पहले यहां फैल रहे विशाल महुए के पेड़ पर बिजली गिरने से वह जलकर राख हो गया। ऐसी स्थिति में उसका ठूंठ बचा रह गया जो अटपटा ही लग रहा था। उसे हटाने के लिए देवता से पाती मांगी गई मगर नहीं दी लेकिन उनका चमत्कार यह दिखा कि वह ठूंठ धीरे-धीरे हरा होने लगा और उसमें गुलमोहर का पेड़ उग आया। ठूंठ बना सूखा पेड़ हरा ही नहीं हुआ, खाखरे की जगह गुलमोहर के रूप में लहलहाता देखा जा रहा है।

यों हमारे यहां वृक्षों को देवता स्वरूप मानने की परम्परा है। अनेक वृक्षों में निवास करने के कारण देव-देवियों के नाम भी वृक्षजनित हैं जैसे- नीमजमाता, पीपलाज माता, बड़ला माता, पाना देवी, केला देवी, आमज माता, आमल्या बावजी, गन्नादेव, घास भेरू, इमल्या बावजी आदि।

पानी पर पैदल यात्रा

पानी पर पैदल चलने की बात बड़ी अनहोनी और विचित्र लगती है परन्तु उदयपुर की पीछोला झील में तीन-तीन साधुओं ने पानी पर चलकर न केवल सबको चकित ही किया अपितु महाराणा से जागीरी तक प्राप्त कर ली।

एकबार पीछोला की परली पार स्थित हनुमानघाट पर बड़े नामी खाकीजी आये। महाराणा शंभुसिंह ने उनके दर्शन करने की इच्छा की। खाकीजी को यह बात कहलवाई गई तो उन्होंने कहा कि महाराणा यहां तक आने का कष्ट न करें। मैं स्वयं पानी पर चलकर महल पहुंचूंगा।

खाकीजी की इस बात पर सबको बड़ा अचरज हुआ। महाराणा ने खाकीजी के सम्मानार्थ अपनी ओर से पंचदेवरी घाट तक नाव भिजवाई। उधर खाकीजी ने रामद्वारा के महाराज को भी पानी पर चलने को कहलवा दिया। महाराज को इस बात पर गुस्सा आया कि खाकीजी उनकी भी परीक्षा लेना चाहते हैं परन्तु महाराज भी कम पहुंचे हुए नहीं थे। उन्होंने अपनी तैयारी कर ली और एक साधु को जाजम लेकर पानी पर बिछवाने को कह दिया। जब जाजम बिछ गई जब उसके चारों कोनों पर चार साधु बिठा दिये और बीच में स्वयं महाराज विराजमान हो गये। देखते-देखते जाजम पानी पर सर्र से चल पड़ी। अपार भीड़ ने यह अजूबा देखा।

इधर खाकीजी पूरे लवाजमे के साथ गाते बजाते चल पड़े। पानी पर पैदल यात्रा की ऐसी कल्पना स्वप्न में भी किसी को नहीं थी। यह यात्रा शाही सवारी जैसी लग रही थी। उन्हीं दिनों गड़ूयादेवरा के वहां एक सांई ठहरे हुए थे। उनके भक्तों ने जब पानी पर चलने की खबर उन्हें दी तो वे कब पीछे रहने वाले थे। उनके पास केवल उनका चिंपिया था। उन्होंने तत्काल उसे पानी में फेंका जिससे वह पानी पर खड़ा हो गया। सांई देखते-देखते उस चिंपिये पर सवार हो गये। फिर क्या था, चिंपिया घोड़े की तरह सरपट चल पड़ा। सांई का यह करिश्मा देख लोग दांतों तले अंगुली दबाते रह गये। कहा जाता है कि महाराणा ने खाकीजी और महाराज दोनों को अपना गुरु बनाया और उन्हें दस-दस हजार रूपयों की जागीर दी। सांई भी इससे वंचित नहीं रहे। उन्हें भी चार हजार की जागीर दी।

ऐसी ही एक घटना चांदपोल बाहर स्थित श्री बड़ा रामद्वारा के परमहंस ध्यानदास महाराज के समय घटी। यहां के महंत नरपतराम रामस्नेही ने बताया कि ध्यानदास महाराज की तपस्या से आकृष्ट होकर महाराणा भीमसिंह ने रामद्वारा के लिए स्थान अर्पण किया। उसी समय पीछोला झील पर जाजम बिछाकर अठारह संतों ने उस पर बैठ कर राम नाम के सत्य की उद्घोषणा करते हुए नाव की तरह उस जाजम को पानी पर चलाया जिसे देख न केवल वहां उपस्थित श्रद्धालुजन अपितु स्वयं महाराणा भीमसिंह भी इस अद्भुत दृश्य को देख चकित हुए थे। उल्लेखनीय है कि आज भी ध्यानदास महाराज की कंठी-माला, चादर तथा हस्तलिखित वाणीजी रामद्वारा की अमूल्य धरोहर बनी हुई है।

- म. भा.

बाजार / समाचार

जैन महावीर युवा मंच के अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर (ह. सं.)। महावीर युवा मंच की वार्षिक बैठक में नरेन्द्रकुमार जैन को आगामी वर्ष के लिए अध्यक्ष चुना गया। यह घोषणा चुनाव अधिकारी संजय नागोरी ने की।

मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि सभी सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया वह हम सब के लिए स्वागत योग्य है। श्री जैन की सेवाएँ मंच के लिए और अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत एवं महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष प्रमीला एस. पोरवाल ने अपने समय में हुई विविध गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए नरेन्द्रकुमार जैन की नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की। कोषाध्यक्ष ओम पोरवाल ने अपने कार्यकाल का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया।

नरेन्द्रकुमार जैन ने सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। संजोयन और धन्यवाद की रस्म हर्षमित्र सरूपरिया, मुकेश हिंगड़ ने अदा की। बैठक में ही वर्षीतप की बड़ी तपस्या करने पर कुलदीप नाहर और सतीश पोरवाल का पगड़ी, उपरना, माला और शॉल द्वारा बहुमान किया गया।

बैठक में निर्मल पोखरना, आलोक पगारिया, मनोज मुणेत, भगवती सुराणा, अजय पोरवाल, नीरज सिंघवी, सतीश पोरवाल, राजेश जैन, कमल कावड़िया, बसंत खिमावत, रमेश सिंघवी, अशोक लोढ़ा, राजेश चित्तौड़ा, विक्रम भंडारी, बसंत लोढ़ा, महेश कोठारी, मधु सामर, प्रेरणा जैन, शुभा हिंगड़, सपना चित्तौड़ा, रंजना भानावत, मधु सुराणा, कांता खिमावत, मंजुला सिंघवी, प्रमीला पोरवाल, प्रवीणा पोखरना, कविता मुणेत, रितु सिंघवी, रश्मि पगारिया, ललिता कावड़िया, उर्मिला भंडारी, ने विचार व्यक्त किये।

भरूचा डिप्यूटी मैनेजिंग डायरेक्टर और झावेरी एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय रिजर्व बैंक ने 19 अप्रैल से तीन साल के लिए एचडीएफसी बैंक के उप प्रबंध निदेशक के रूप में कैजाद भरूचा और कार्यकारी निदेशक के रूप में भावेश झावेरी की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है।

भरूचा 35 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ एक करियर बैंकर हैं। वे 1995 से बैंक से जुड़े हुए हैं। कार्यकारी निदेशक के रूप में अपनी वर्तमान स्थिति में, वे कॉर्पोरेट बैंकिंग, पीएसयू, पूंजी और कमोडिटी बाजार, वित्तीय संस्थानों, हिरासत, म्युचुअल फंड, वैश्विक क्षमता केंद्र और वित्तीय के क्षेत्रों को कवर करने वाले थोक बैंकिंग, प्रायोजक कवरेज, और बैंक कवरेज के लिए जिम्मेदार हैं। झावेरी एचडीएफसी बैंक के समूह प्रमुख - संचालन, नकदी प्रबंधन और एटीएम उत्पाद हैं। अपनी वर्तमान भूमिका में वे देशभर में व्यापार और संचालन के लिए जिम्मेदार हैं और बैंक के विविध उत्पाद सूट में कॉरपोरेट, एमएसएमई और रिटेल वर्टिकल के लिए एसेट, देनदारियों और लेनदेन के लिए एक निर्दोष संचालन निष्पादन क्षमता बनाने और वितरित करने के लिए जिम्मेदार हैं। उनके पास 36 से अधिक वर्षों का समग्र अनुभव है।

जेके टायर ने पीसीआर टायर विकसित किया

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज ने एक बिल्कुल नया टिकाऊ टायर विकसित किया है, जो कम कार्बन दर्ज करते हुए एक मानक रेडियल टायर की तुलना में शानदार प्रदर्शन प्रदान करेगा। इस 'यूएक्स ग्रीन' टायर के प्रदर्शन को मान्य करने के लिए सड़कों पर इनडोर और आउटडोर के साथ साथ टेस्ट ट्रैक्स पर भी बड़े पैमाने पर गुणवत्ता की जांच परख के लिये परीक्षण किया गया है। प्रतिभाशाली टीम द्वारा डिजाइन और विकसित, जेके टायर के ग्लोबल टेक सेंटर में किए गए एक दशक के लम्बे शोध के आधार पर, आर एण्ड डी टीम वैकल्पिक समाधान बनाने पर काम कर रही है जो उत्पादों को पारम्परिक पेट्रोलियम आधारित सामग्री को स्थायी सामग्री से बदलने की अनुमति देगा।

चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि टायर को 80 प्रतिशत टिकाऊ सामग्री का उपयोग करके पूरी तरह से डिजाइन और विकसित किया गया है। यह विकास न केवल हमारी अत्यधिक कुशल आर एण्ड डी टीम का प्रतीक है, बल्कि यह 2050 तक कार्बन तटस्थता की ओर बढ़ते हुए, सतत विकास को आगे बढ़ाने और सामाजिक मूल्य निर्माण को बढ़ावा देने के लिए हमारी गंभीर प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है। ऐसे टायरों की रेंज उचित समय पर पेश की जाएगी। उत्पाद का विकास सचेत रूप से सस्टेनेबल, रिसाइकिल्ड और रिन्यूएबल मेटीरियल का उपयोग करके किया गया था। टायर को प्राकृतिक रबर, बायो एट्रिब्यूटेड एसबीआर और बीआर, बायोबेस्ड ऑयल, रिसाइकिल रबर पाउडर, रिसाइकिल कार्बनसियस ब्लैक, रिसाइकिल पॉलिएस्टर और स्टील वायर जैसी अत्यधिक टिकाऊ सामग्री के साथ विकसित किया गया है। इनमें से अधिकांश सामग्रियां आईएसीसी (अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता और कार्बन प्रमाणन) के अनुरूप प्रमाणित हैं।

पिम्स हॉस्पिटल में समय पूर्व जन्मे बच्चे का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेड़िकल सांईसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने समय से पहले जन्मे बच्चे का सफल उपचार किया है।

पिम्स के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि डॉ. अंकितकुमार पंचाल के नेतृत्व मे 7वें महिने में पैदा हुए नवजात शिशु को दो महीने एनआईसीयू में रखने के बाद सफलतापूर्वक घर भेजा है। समय पूर्व पैदा हुए नवजात शिशुओं को मान्य वजन तक पहुँचाना एक जटिल और लम्बा श्रम रहता है। इनमें इन्फेक्शन और दूध का पचना मुख्य बाधाएं डालते हैं। साथ ही फैफड़े का परिपक्व ना होना भी एक बड़ी समस्या होती है। इसे बीपीडी (ब्रोंकोपुलमोनरी डिसप्लेसिया) कहते हैं।

श्री अग्रवाल ने बताया कि जन्म के समय बच्चे का वजन बहुत कम था। सांस लेने मे तकलीफ हो रही था जिस पर उसे कृत्रिम सांस की मशीन पर रखा गया। बच्चे में दूध पचाने में समस्या, आंतों का संक्रमण, पीलिया, ऑक्सीजन डिपेन्डेन्सी आदि समस्याएं जो समय पूर्व होने वाले बच्चों में होती है, देखी गई। इन सभी का सफलतापूर्वक इलाज किया गया। पूर्ण स्वस्थ होने पर 61वें दिन बच्चे को डिस्चार्ज किया गया। बच्चे का उपचार चिरंजीवी योजना के तहत नि:शुल्क किया गया है।

इस कार्य में पिड्रियाट्रीक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक पाराशर, डॉ. राहुल खत्री, डॉ. प्रागी डिंगरा पिडियाट्रीक विभाग के रेजीडेंसी डॉ. उज्ज्वल, डॉ. अमिता, डॉ. वैशाली, डॉ. तनय, डॉ. शुभाजीत के साथ एनआईसीयू इंचार्ज अशोक, कुलदीप, राशी, वर्षा, अस्वथी, दीपक, लोकेश, शिव, रेखा, रीना, भंवर, मेहनाज, अमित की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

स्विगी डाइनआउट द्वारा जीआईआरएफ लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी ने पहली बार अपने एप पर स्विगी डाइनआउट के माध्यम से डाइनआउट फ्लैगशिप प्रोग्राम ग्रेट इंडियन रेस्टोरेंट फेस्टिवल (जीआईआरएफ) को लॉन्च किया है। यह ऑफर 4 जून तक उपलब्ध रहेगा। इस फेस्टिवल के 7वें संस्करण के तहत स्विगी डाइनआउट के यूजर उदयपुर में 82 रेस्टोरेंट्स में फ्लैट 50 प्रतिशत छूट डील का लाभ ले सकेंगे। इसके अतिरिक्त उन्हें एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड पर 15 प्रतिशत अतिरिक्त (50 प्रतिशत के अलावा) छूट का भी लाभ मिलेगा।

उदयपुर में स्वाद के दीवानों को सर्वश्रेष्ठ रेस्टोरेंट में डाइनआउट का मौका देने के लिए स्विगी डाइनआउट ने फिरकी, होटल प्राइड - 360 डिग्री इजाकया, द आर्टिस्ट हाउस, कनेर बिस्ट्रो, विजयगढ़ पैलेस, अरण्य विलास रिजॉर्ट, बोटैनिकल कैफे, चारकोल और माथरा - द हाइट्स जैसे कुछ बड़े रेस्टोरेंट के साथ साझेदारी की है। जीआईआरएफ के दौरान स्विगी अपने एप पर एक्सक्लूसिव लिमिटेड डील पेश करेगा, जिन्हें इस फेस्टिवल का हिस्सा बने रेस्टोरेंट्स में रीडीम कराया जा सकेगा। जीआईआरएफ के साथ ग्राहक अपने पसंदीदा व्यंजनों का आनंद ले सकेंगे।

चांदमल विरानी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने

निंबाहेड़ा (ह. सं.)। अखिल भारतीय विरानी महासभा का सम्मेलन डिग्गी मालपुरा में गत दिनों आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न प्रांतों से सैकड़ों विरानी बन्धुओं ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान सर्वानुमति से राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया गया।

चांदमल एवं राजेंद्र विरानी

इसमें निंबाहेड़ा के चांदमल को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। संरक्षक मंडल में भिनय के राजेंद्रकुमार, विजयनगर के उमरावसिंह, भीलवाड़ा के रिखबकुमार एवं निंबाहेड़ा के मनोहरलाल को मनोनीत किया गया।

उपाध्यक्ष पद पर उदयपुर के राजेंद्रकुमार, महामंत्री पद पर चित्तौड़गढ़ के राजेशकुमार, सहमंत्री भीलवाड़ा के राजेंद्रकुमार लादूलाल एवं कोषाध्यक्ष पद पर मालपुरा के सोहनलाल का मनोनयन किया गया। महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष पद पर श्रीमती शर्मिला, महामंत्री केसरदेवी तथा उपाध्यक्ष संगीता का मनोनयन किया गया।

कॉर्नियल टीयर का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने चार वर्षीय बच्ची के कॉर्नियल का सफल उपचार किया है।

बाड़मेर की रहने वाली चार वर्षीय बच्ची के खेलते समय आँख में पेन की नोक लग गयी। इससे उसकी आँख की रोशनी चली गई। रोगी के माता-पिता बच्ची को कई अस्पतालों में ले गए लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। इस पर माता-पिता बच्ची को गीतांजली हॉस्पिटल लेकर आये। यहाँ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. ऋषि मेहता ने तुरंत भर्ती कर ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद बच्ची के आंख की रोशनी वापस आ गई। इस सफल ऑपरेशन को करने वाली टीम में डॉ. ऋषि मेहता के साथ एनेस्थीसिया विभाग से डॉ. करुणा, रेजिडेंट डॉ. विश्वा पटेल, नर्स तरुणा माली शामिल थे। उपचार चीरंजीवी योजना के तहत निशुल्क किया गया।

हिन्दुस्तान ज़िंक सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान ज़िंक को मुंबई में आयोजित पुरस्कार समारोह के दौरान इंडिया रिस्क

मैनेजमेंट अवार्डस के 9वें संस्करण में मास्टर्स ऑफ रिस्क ज्यूरी अवार्ड इन मेटल्स एंड माइनिंग एंड ईएसजी स्पेशलाइजेशन से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार, हिन्दुस्तान ज़िंक के सीएफओ संदीप मोदी एवं चीफ ऑफ इंटरनल ऑडिट एंड रिस्क मैनेजमेंट रोहित सारदा को नाबीएफआईडी के अध्यक्ष के.वी. कामथ ने प्रदान किया।

ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि यह पुरस्कार हमारे सिस्टम और प्रक्रियाओं के लिए प्रमाण है जो कि रिस्क को कम करने और सुचारू संचालन, लोगों के प्रबंधन और शीर्ष से नीचे प्रबंधन दृष्टिकोण के साथ अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए है।

बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष सेशन आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के प्रयास में डाबर की ओर से कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक डाबर वीटा ने विशाल जागरुकता अभियान का आयोजन किया। इसके माध्यम से बच्चों को सेहत से जुड़े सात पहलुओं जैसे अच्छा डाइजेशन, रेस्पीरेटरी हेल्थ, मजबूत हड्डियों एवं मांसपेशियों, ताकत, स्टैमिना, और बेहतर इम्युनिटी के बारे में जागरुक किया गया।

अभियान उदयपुर के फील्ड क्लब, क्रिकेट अकादमी में आयोजित हुआ, जिसमें 100 बच्चों ने भाग लिया। इस दौरान बच्चों को डाबर वीटा स्पेशल हेल्थ किट भी दी गई। कार्यक्रम में डाबर इंडिया लि. के मैनेजर कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस दिनेश कुमार, आयुर्वेदिक प्रैक्टिशनर, डॉ. परमेश्वर अरोरा, उदयपुर क्रिकेट एकेडमी के विवेक शर्मा, विक्रमसिंह चौहान, अनिल सौंधी, हेमेन्द्रसिंह उपस्थित थे।

दिनेश कुमार ने कहा कि आजकल बच्चे पढ़ाई से लेकर खेलों और एक्स्ट्रा-करीकुलर एक्टीविटीज़ में अच्छा परफोर्मेन्स देना चाहते हैं। इसके लिए उन्हें संतुलित एवं पोषक आहार की जरूरत है, ताकि उनका विकास ठीक से हो सके। डाबर वीटा ऐसी हेल्थ ड्रिंक है जो बढ़ते बच्चों को सभी जरूरी पोषक तत्व उपलब्ध कराती है। डाबर के 138 सालों के भरोसे, गुणवत्ता और अनुभव पर आधारित डाबर वीटा 30 आयुर्वेदिक बूस्टर्स के गुणों से भरपूर है।

डॉ. परमेश्वर अरोरा ने कहा कि संतुलित आहार जैसे फलों, सब्जियों, साबूत अनाज के साथ अच्छी हेल्थ ड्रिंक बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए बहुत जरूरी है। बच्चों को खास मैक्रो, माइक्रो एवं फाइटो (पौधों से मिलने वाले विशे पोषक तत्व) न्यूट्रिएन्ट्स की जरूरत होती है। आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर ऐसे ही पोषक तत्व डाबर वीटा को कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक बनाते हैं जैसे आंवला और अश्वगंधा इम्युनिटी बढ़ाकर कई बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं, ब्राह्मी और शंखपुष्पी बच्चों की एकाग्रता एवं लर्निंग की क्षमता बढ़ाते हैं।

वीआईएफ़टी में फ़िल्मी सितारों का जमघट

उदयपुर (ह. सं.)। वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ़ फ़ैशन टैक्नॉलोजी एंड मास कम्यूनिकेशन के पत्रकारिता विभाग द्वारा फ़िल्म प्रमोशन इवैंट का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में वीआईएफटी के वार्षिक फैशन शो इल्युमिनाती-23 के प्री ऑडिशन तीन दिन हुए। यह युवाओं के लिए फैशन जगत में आगे बढ़ने का एक बड़ा प्लेटफार्म है।

बॉलीवुड की हालिया रिलीज़ बहुचर्चित वेब सीरीज़ 'आई एम अनयूज्ड' के प्रमोशन के लिए सीरिज की लीड एक्ट्रेस आसमा सैयद, लीड एक्टर रवि कोठारी और डायेक्टर दुष्यंतप्रतापसिंह वीआईएफ़टी कैम्पस में पत्रकारों से रूबरू हुए और वेब सीरीज़ में उठाए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इस अवसर पर साई तिरूपति यूनिवर्सिटी के चैयरपर्सन आशीष अग्रवाल, सीईओ श्रीमती शीतल अग्रवाल, वीआईएफटी की डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता तथा प्रिंसिपल विप्रा सुखवाल मौजूद रहे।

डायरेक्टर दुष्यंतप्रतापसिंह ने कहा कि कोई भी दर्शक फिल्म का रिव्यू करता है, आपके काम की सराहना करता है तो उसका धन्यवाद करना चाहिए। ओटीटी एक ऐसा मंच है जिसमें खुद को कुछ कर दिखाने, साबित करने का मौका मिलता है। कमाई का माध्यम आज भी सिनेमा ही है और कल भी सिनेमा ही रहेगा। फिल्मों में बढ़ते बोल्ड सीन के चलन और उसके नकारात्मक और दुष्प्रभावों के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि फिल्म की कहानी के आधार पर यह सब करना पड़ता है लेकिन उसमें ध्यान रखना जरूरी है कि समाज में इसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़े।

उन्होंने बताया कि कनीज़, इश्क किल्स, यारों का टशन, एक मीरासन, जिंदगी की महक और शुभरात्रि जैसे सीरियल्स के ज़रिए बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान क़ायम करने वाली आसमा लीक से हटकर काम करने के लिए जानी जाती हैं। फुकरे रिटर्न्स, मरदानी 2, क्रिमिनल जस्टिस, योर ऑनर, द गोन गेम, स्टेट ऑफ़ सिएज, शूरवीर और त्राहिमाम् जैसी फिल्मों और वेब सीरिज़ के ज़रिए बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान क़ायम करने वाले रवि कोठारी अपने दमदार अभियनय के लिए जाने जाते हैं। ख़ासतौर पर क्राइम वर्ल्ड नामक सीरियल में निभाए गए, उनके इन्वेस्टिगेटर ऑफ़िसर के रोल में वे युवाओं में ख़ासे चर्चित हैं। इस मौके पर अभिनेता मुश्ताक ख़ान, राजकुमार कन्नौजिया और सीरीज के बाकी कलाकार भी मौजूद थे।

बिगड़े मौसम से आम के मोड़ जले

इसबार मौसम के बिगड़े मिजाज के कारण कुंभलगढ़ क्षेत्र में आम के वृक्षों के मोड़ ही अपनी मरोड़ में नहीं पनप सके। इससे यह फसल चौपट होगई। आम की आवक इस क्षेत्र में अत्यंत कमजोर रही। फोटो : जितेन्द्र मेहता

नीम की हवा....

(पृष्ठ तीन का शेष)

ग्रामीणजनों में खेत पर काम करने के दौरान नीम की डाल पर झूला डाल शिशु को सुलाकर कृषक महिलाएं निश्चिंत हो जातीं। इससे शिशु को नीम की हवा से गहरी नींद लगी रहती और विपरीत हवाएं, लू आदि से भी बचाव रहता।

उदयपुर में सन् 1961 में जब पहलीबार मैंने भारतीय लोककला मण्डल से अपने सम्पादन में राजस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय पारिवारिक लोकगीतों का संग्रह 'राजस्थान स्वर लहरी' प्रकाशित किया तो उसमें श्रेष्ठ 32 गीतों में अन्तिम गीत ही नीमड़ली का दिया था। इस गीत की शीर्ष पंक्ति है- 'देखो म्हारे आंगणिये में ऊगी नीमड़ली।' इस गीत का अन्तिम बंध है-

सोना रो कलस ले म्हें सरवरिये ने जाऊंली
भाई रे भतीजां खातर नीमड़ली सींचाऊंली
म्हारो वीरो झोला देवे हरी नीमड़ली
दूधां न्हावो पूतां फलो वधो नीमड़ली....

हमारे देश में नीमड़ली बड़ी उपयोगी है। इसे घरों के पास, आंगन में तथा बाग-बगीचों में लगाया जाता है। कई लोकगीत भी हैं जो पूजा के समय स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं।

प्रस्तुत नीमड़ली गीत में एक युवती जिसके आंगन में नीमड़ली लहरा रही है, उसकी पूजा करने के लिए अपनी सखी-सहेलियों तथा पड़ोसिनों को बुला रही है। नीमड़ली के हल्के-हल्के पत्तों के हिलने से जो आवाज निकलती है, लगता है अत्यन्त मस्ती के साथ डालियों के संग वे लोरियां गा रही हैं। सखी अपनी हरी भरी नीमड़ली के लिए बलिहारी है, कारण कि इसके बढ़ने के साथ ही साथ उसी रफ्तार से उसके परिवार में भी धन धान्य तथा सुख सम्पत्ति की वृद्धि होती जा रही है।

सखियों! देखो मेरे इस आंगन में यह फली-फूली नीमड़ली (नीमड़ी) कितनी प्यारी तथा मनभावनी लग रही है। हरी भरी नीमड़ली को देखते ही तबीयत हरी हो जाती है। हे मेरी नीमड़ी बहिन! तूं मुझे इतनी प्रिय है कि मैं यदि तुझे दूध-दही से सींचूं को भी कम है। श्रावण के इस सुहावने मौसम में जो तीज आदि त्यौहार हंसते-खेलते आते हैं, उन्हें भी लगता है तू ही बुलाकर लाती है।

अत: तेरे सहारे ही झूले डालकर हम सपरिवार झूला झूलेंगे। सोने के कलश में पानी लाकर अपने भाई-भतीजों के लिए तुम्हें सींचूंगी ताकि वे जब कभी भी यहां आये, तुम्हारे नीचे विश्राम कर अपने आपको सुखी अनुभव कर सकें। मेरा भाई मुझे विविध प्रकार के झूलों से झुलायेगा।

हे मेरी फली-फूली नीमड़ी! तुम हमेशा इसी प्रकार फलती-फूलती रहो ताकि तुम्हारे साथ मेरा परिवार भी इसी प्रकार फलता-फूलता रहे।

गीत के अन्त में ''दूधां न्हावो पूतां फलो'' की कितनी सुन्दर भावना व्यक्त की गई है। परिवार को खुशहाल देखने के अलावा गृह नारियों की और क्या अभिलाषा हो सकती है? नारी जीवन की अन्तिम अभिलाषा ही मातृत्व पद प्राप्ति जो है।

नीम वृक्ष के सहारे नीम गिलोय नामक बेल फलती-फूलती है। इसकी जड़वेल का कई प्रकार से प्रयोग होता है जो पेट तथा शरीर की अनेक बीमारियों का शर्तिया इलाज है। नीम किसी स्थान, गांव, चौपाल, चौराहा की पहचान होता है। इसके चारों ओर बने चबूतरे पर कई प्रकार के कामकाज होते हैं।

पंचों की बैठक से लेकर आते-जाते का विश्राम स्थल भी बनता है। पर्यावरण की दृष्टि से तो नीम की हवा सौ रोगों की दवा ही कही गई है। कड़वे-कड़वे नीम के नीचे प्रेमी युगल का मीठा-मीठा मिलन भी कई कथा-गाथाओं का सबब बना है। वहीं अनेक ऐसे उदाहरण भी हैं जब इसकी साक्षी देती अनेक सजाएं हुई हैं। यहां तक कि फांसी के फंदे लगाकर मौत के घाट तक उतारे हैं।

नीम की छाया में रहना, कड़वी कोमल पत्तियां चबाना और छिलके को भूनकर मंजन से दांत मांजना तथा दातुन करना सबको प्रिय है। कोठे में गेहूं के नीचे नीम की पतली-पतली डालियां और पके पत्ते बिछाने से घुन नहीं लगता। झाड़ागर नीम की डाली से हवा कर जहर उतारते हैं। गांव की बसावट में जिन पेड़ों को जरूरी माना गया उनमें नीम प्रमुख है। बरगद अगर शिव है तो नीम पार्वती। नीम के अनेक गुण गरिमा लिए हैं।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type-
Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

यात्रावृत्त : बीकानेर में बारह दिन

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

यादों का पुलन्दा बीकानेर :

बीकानेर मेरा उस दौर का परिचित शहर है जब मैंने जैन गुरुकुल छोटीसादड़ी से 1954 में हाईस्कूल की परीक्षा पास कर आगे की पढ़ाई के लिए बीकानेर चला गया। वहां पूर्व से मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत अध्ययनरत थे। मैंने वहां रामपुरिया इन्टर कॉलेज से इन्टर मीडिएट तथा डूंगर कॉलेज से बी. ए. किया।

मेरे साथ कानोड़ से हरिश्चन्द्र दक, शान्तिलाल मुर्डिया, सुन्दर मेहरी, मोतीलाल डूंगरवाल तथा भंवरलाल नंदावत थे। नंदावत अभी कानोड़ में ही हैं। थोड़ा कम सुनते हैं। शेष साथी स्मृतिशेष हो गये हैं। अन्यों में सरदारमल जैन, सौभाग्यमल नाहर, मानमल नाहर, राजमल दक याद आ रहे हैं। भीनासर में भूपराजजी जैन थे जिनका मेरे भाई साहब और मेरे से लगातार सम्पर्क बना रहा। उसके बाद भी नीमच में रह रहे उनके सुयोग्य पुत्र पारसजी जैन से हमारा सम्पर्क उसी जिन्दादिली को बरकरार रखे हुए है।

हम लोग ठठेरा बाजार स्थित सेठ अगरचन्द भैरोंदान सेठिया द्वारा संचालित सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था में रहने, खाने, पीने आदि की निशुल्क व्यवस्था लिए हुए थे। वह काल हमारा स्वर्णिम काल था जब हम हर साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेकर मेवाड़ी पहचान दिये थे। उसके बाद भी मेरा बीकानेर जाना-आना होता रहा।

भारतीय लोककला मण्डल में रहते राजस्थानी लोककला विधाओं तथा उनसे जुड़े कलाकारों से सम्पर्क करने तथा लिखने के सिलसिले में उधर के आसपास के ग्रामीण इलाकों में भी बहुत घूमा।

होली पर अभिनीत रम्मती ख्यालों का विशद अध्ययन कर एक पुस्तक भी लिखी। वहां के गणगौर त्यौहार और खासकर सेठ चान्दमल ढड्ढा द्वारा प्रारम्भ की गई मनौती स्वरूप गणगौर के साथ भाइया की बैठी गणगौर पर भी मैंने धर्मयुग में लिखा जो करोड़ों के जेवर से आज भी ढड्ढों के चौक में सशस्त्र पहरे में सजी सार्वजनिक रूप से दर्शनार्थ रहती है।

वहीं भारतीय विद्या मन्दिर में कार्यरत विद्वान मूलचन्द 'प्राणेश' से मेरा घनिष्ट परिचय रहा। वहां से प्रकाशित 'वैचारिकी' अब तो कलकत्ता से प्रकाशित होने लग गई है।

वहीं तब सादुल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट में अगरचन्दजी नाहटा से परिचय हुआ जो अन्त तक रहा। यहां से प्रकाशित 'राजस्थान भारती' बड़ी चर्चित शोध पत्रिका रही। तब प्रकाशन भी कई महत्त्वपूर्ण निकले। वहीं अन्नाराम सुदामा के घर पर भी मिलने गये। उनकी सादगी ने मुझे मेरे मित्र प्रो. देवकर्णसिंहजी की याद दिली दी। सब अब अतीत की बातें हो गई हैं जो याद करने पर बड़ा जीवन्त रस देती हैं। ऐसा होता भी है जब व्यक्ति जीवन के अन्तिम पड़ाव पर होता है तब अतीत में व्यतीत सुखद स्मृतियां ही उसे ताजगी देती जीवन्त बनाये रखती हैं।

देशनोक की करणी माता के दर्शनार्थ भी लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक सरजुदासजी के सान्निध्य में हमारी यात्री बड़ी उपलब्धि लिये रही जिस पर खासतौर से माता के साथ हर समय बने रहने वाले स्वच्छन्द विचरण करते, मन्दिर के भीतर ही रहते भक्तों को चकित करने वाले काबा, चूहों के रहस्य को लेकर भी साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा।

बीकानेर का एक सुखद पक्ष यह भी जुड़ा कि बाद में वहीं मेरी छोटी बहिन जिसका ब्याह बड़ीसादड़ी हुआ, वह स्थायी रूप से बीकानेर बस गई। यही नहीं, मेरी आत्मजा डॉ. कविता भी वहीं बस गई। दोनों परिवार अभी भी ऐसे हैं जहां मुझे मिलने भी जाना होता है। बहिनवाले कंवरसा. उदय नागोरी अधिक उम्र नहीं ले सके सो उनकी कई साहित्यिक यादें कचोटती रहती हैं। उधर के अनेक स्थानों की यात्रा उन्हीं के साथ की और खूब लिखा भी।

इस बार मैं लगभग पांच वर्ष बाद बीकानेर गया। रेल की सवारी करते मैं, कविता और जमाता डॉ. सतीशजी मेहता के साथ फुलेरा गये। वहां से तीन घण्टे बाद बीकानेर की गाड़ी पकड़नी थी पर वह चार घण्टे लेट थी सो सात घण्टे इस प्लेटफार्म से उस प्लेटफार्म पर हर पांच-दस मिनिट में आने-जाने वाली गाड़ियों को निहारते-निहारते अन्त में रात को दो बजे 02 मार्च 2023 को बीकानेर पहुंचे।

सतीशजी पूरे समय जब तक वहां मेरा प्रवास रहा, अपने स्कूटर या फिर कार द्वारा सबसे महनीय भेंट कराते रहे। शहरी इलाके में जहां पतनी घनी आबादीवाली गलियां थीं वहां तो स्कूटर ही हमारा साथी रहा पर जहां चौड़ा रास्ता था वहां कार में कविता भी हमारे साथ रही।

बीकानेर में बारह दिन बड़ी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां वाले रहे। मुख्यत: तो परिचितों से मिलने-जुलने का ही समय रहा। एक लेखक के लिए अच्छी बात यह रहती है कि वह जहां भी जाता है अपनी आंखें-पांखें दिये रहता है सो उसे कुछ-न-कुछ और कभी-कभी तो बहुत कुछ जानने, समझने तथा फिर लिखने का पर्याप्त मसाला हाथ लग जाता है।

इसी बीच मेरे मित्र लक्ष्मीनारायण रंगा का निधन हो गया। जब मैंने शिवराजजी छंगाणी से रंगाजी से मिलने को कहा तो वे उदास मन से बोले, वे अस्पताल में आईसीयू में भर्ती हैं सो चाहते हुए भी उनसे मिलने नहीं जा सका और बाद में तो वे अपने को बचा ही नहीं सके। कुछ समय पूर्व उदयपुर से फोन किया तो उसने पुत्र कमल रंगा ने बताया कि पिताश्री अस्वस्थ चल रहे हैं और श्रवण शक्ति भी कम हो गई सो मैं चुप्पी साधे उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की ही कामना करता रहा। सच तो यह है कि बीकानेर मेरे लिए बासंती यादों का पुलिन्दा ही बना हुआ है।

हमारे यहां हर संख्या का अपना विशिष्ट महत्त्व रहा है। बारह की संख्या भी इस सन्दर्भ में कम महत्त्व वाली नहीं है। वर्षों पूर्व बूंदी में एक हरबोला से मांगते समय यह पंक्ति बार-बार सुनी थी- 'बारा बरस बीते जजमान, अब तो करो दच्छिना दान।' हरबोला एक जाति विशेष होती है। इस नाम को सर्वाधिक प्रसिद्धि तो कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान की झांसीवाली रानी लक्ष्मीबाई पर लिखी सुप्रसिद्ध कविता 'बुंदेलों हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी / खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसीवाली रानी थी' से मिली।

इधर मेवाड़ में एक मांगणियार लड़के से मैंने बचपन में 'बारा बरस का सरवण व्हीया' पंक्ति से श्रवणकुमार की जीवनपरक कथा-गायकी सुनी थी। बारा कोसां बोली बदले वाली कहावत तो सभी की जुबान पर चढ़ी हुई हमसफरी बनी हुई है। वर्ष में माह भी बारह ही होते हैं। बीकानेर में बारह गुवाड़ की रम्मत और जिस पिरोल में बारह परिवार रहते हों उसे बारा पोल तथा उदयपुर के पास बारह पालों का प्रतिनिधि गांव बारापाल प्रसिद्धि लिए है।

दिन हो अथवा रात, बारह बजे का समय अपशकुनी अमंगलकारी समझा गया है। इस समय को सभी समझेबुझे टालते हैं। यह समय भूत प्रेत पिशाचादि के विचरण का रहने से कई व्यक्तियों को झपट में लेकर अनेक तरह की ऐसी भी मांदगी छोड़ देता है कि उनका बचना ही दूभर हो जाता है। गुस्से में किसी की बारह बजा देना भी जुमला हमने सुना है।

चित्तौड़ के शिव मृदुलजी ने संख्याओं को लेकर तो एक सुन्दर उपयोगी और जानकारी से परिपूर्ण पुस्तक ही लिखदी। वाहन खरीदने के बाद उसके मन चाहे नम्बर लेने के लिए भी खरीददार एक-एक लाख तक की बोली लगाकर अपनी चाह वाली संख्या लेते हैं जो उन्हें बड़ी फलित सिद्धि होती है। किसी की मृत्यु के बाद बारह दिन तक उसके निमित्त बैठक रखने और बारहवें दिन मृत्युभोज करने के पीछे भी अमंगल दूर करने की दृष्टि रही है।

लूंठे कवि सद्दीकजी की स्मृति :

सलीम

मरुधरानगर में कविता के मकान से सटा मोहम्मद सद्दीकजी के पुत्र सलीम का मकान है। उनसे मिल सद्दीकजी की याद ताजा होगई। वे हिन्दी-राजस्थानी में सभी तरह के गीत, गजल, दोहा, सोरठापरक छन्द लिखने में माहिर थे। उनकी राजस्थानी गीति रचनाएं तब कवि-सम्मेलनों में बड़ी उमड़घुमड़ धरती की धुन लिए चाव से सुनी जाती थीं।

मैंने तब उनके साथ इधर अपनी पढ़ाई के दौरान काव्य-पाठ किया था। उनके साथ भीम पंड्या तथा गंगाराम 'पथिक' भी याद आते रहे। पथिक को तो मैंने बाद में अर्ध-चेतनावस्था में जीते देखा था। उनकी पहचान-शक्ति भी नदारद हो गई थी। डॉ. सतीशजी के संग्रह में सद्दीकजी लिखित राजस्थानी की दो पुस्तकें जूझती जूण (1979) तथा अंतस तास (1989) एवं अभी अंधेरा है (1993) नामक हिन्दी काव्य-संग्रह देखने को मिले।

दूसरे दिन प्रात: सलीम, उनकी पत्नी नजमा और माताजी भी मिलने आ गईं। उनका 'कवि कुटीर' नामक निवास सतीशजी के घर से ही सटा हुआ है। सलीम ने पिता सद्दीकजी की गाई कविताएं भोपाल तथा जोधपुर से उनके कवि-मित्रों के संग्रह से बड़ी मशक्कत से प्राप्त कीं जो मुझे भी सुनाई तो उनकी बुलन्द वाणी का मधुर स्वर मरुधरा निवासियों को बड़े सवेरे मधुरिमा सिक्त कर मंगल शकुन दे गया।

सलीम ने अपनी बुलन्द वाणी द्वारा सद्दीकजी की राजस्थानी कविताओं की हू-ब-हू प्रस्तुति के लिए पहचान बनाई है। उन्होंने उनके कई संस्मरण सुनाये जिनमें उनकी एक सफल जनप्रिय-लोकप्रिय कवि-छवि मिलती है।

जब संजय गांधी बीकानेर आये तब उन्हें देखने-सुनने एक लाख के करीब पब्लिक का जमावड़ा होगया लेकिन उनका हेलीकोप्टर देरी से पहुंचा तब उस जनउमड़ाव को प्रभावी ढंग से अनुशासित करने कलेक्टर ने अपना वाहन भेज सद्दीकजी को आमंत्रित कर उनके ओजस्वी एवं प्रभावी काव्यपाठ से जो समा बंधा उसकी मधुर यादें अब भी कई लोगों की स्मृति में हैं।

शिववाड़ी महंत विमर्शानन्दजी से भेंट :

होली पर महंत स्वामी श्री विमर्शानन्दगिरिजी महाराज से शिववाड़ी गांव स्थित लालेश्वर महादेव मन्दिर-मठ में भेंट की।

शिववाड़ी महंतजी को 'शब्द रंजन' भेंट करते डॉ. भानावत। साथ में डॉ. कविता एवं डॉ. सतीश मेहता

इनसे पूर्व सोमगिरि महाराज महंत थे। वे आत्मारामजी शर्मा के भाई थे जो मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के सहपाठी थे। तब मैं भी बीकानेर पढ़ता था। आत्मारामजी से मेरा उनके अन्तिम काल तक सम्पर्क रहा। उनके पिताश्री अच्छे वैद्य थे जो तब बड़े ख्यात थे।

आत्मारामजी के भाई होने से सोमगिरिजी से स्वत: ही मेरा जुड़ाव होगया। वे जोधपुर में इंजीनियरिंग कॉलेज में व्याख्याता रहे फिर जगद्गुरु शंकराचार्य प्रवर्तित परमहंस संन्यास की दीक्षा ग्रहण कर 23 वर्ष माउन्ट आबू में वेदान्त अध्ययन करते साधना की और तदनन्तर 1994 में लालेश्वर महादेव के महंत बने। कोरोना काल में 19 मई 2021 को वे ब्रह्मलीन हुए।

वर्तमान महंत विमर्शानन्दजी 02 जून 2021 से महंत पदासीन हैं। टौंक के विधि महाविद्यालय में अध्यापन के उपरान्त उन्होंने सोमगिरिजी से परमहंस संन्यास की दीक्षा ली। लालेश्वर महादेव मन्दिर का निर्माण सन् 1880 में महाराजा डूंगरसिंह ने करवाया। धार्मिक, साहित्य एवं अन्य महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों में महंतजी ने वहां के शूटिंग संस्थान द्वारा कई श्रेष्ठ निशानेबाज तैयार किये हैं।

गीता को लेकर कई तरह की प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित की जाती हैं। वर्तमान समय में हो रहे मानव मूल्यों के क्षरण पर अनेक दृष्टियों से बातचीत करते हमारा धर्म, अध्यात्म तथा नैतिक जीवन में अभ्युत्थान पर बड़ी देर तक सार्थक चिन्तन हुआ। विदा वक्त 'संस्कृति सुधा' पुस्तक भेंट में दी जो सोमगिरिजी के विचारों का विमर्शानन्दगिरिजी द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन का सार-तत्व है।

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।